सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र

पूरा वर्ष अख़बार नि:शुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

::Guwahati, Friday, 10 April, 2026 :: Vol-13 Year-1 :: शुक्रवार । 10 अप्रैल 2026 । शक संवत 1948 । चैत्र । कृष्ण । अष्टमी । :: पृष्ठ-12 । मूल्य - 5 रुपए ।

समस्त पाठकों एवं शुभचिंतकों को रंगाली बिहू की हार्दिक शुभकामनाएं
-जन जन विचार परिवार

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

बिहू : उत्सव से आगे

असम की सांस्कृतिक पहचान का सबसे जीवंत प्रतीक रंगाली बिहू केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन की नई शुरुआत का संदेश है। यह वह समय है जब प्रकृति, समाज और मानवीय भावनाएं एक साथ नवजीवन का उत्सव मनाती हैं। खेतों में लहराती हरियाली, ढोल-पीपे की गूंज और युवाओं की उमंग-ये सब मिलकर एक ऐसे समाज का चित्र प्रस्तुत करते हैं, जो अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है।

लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हम इस उत्सव के वास्तविक संदेश को समझ पा रहे हैं? क्या रंगाली बिहू केवल नृत्य, संगीत और आयोजन तक सीमित रह गया है, या फिर यह आज भी हमें समाज के मूल्यों की याद दिलाता है?

रंगाली बिहू का मूल तत्व है-प्रकृति के साथ संतुलन, श्रम का सम्मान और सामाजिक एकता। 'गोरु बिहू' में पशुओं के प्रति कृतज्ञता, 'मानुह बिहू' में आपसी प्रेम और 'गोसाईं बिहू' में आध्यात्मिक आस्था **शेष पृष्ठ 2 पर**

भांजे पास, मामा के रिजल्ट का इंतजार

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम में इस समय दो अलग-अलग 'रिजल्ट' को लेकर जबरदस्त चर्चा है-एक तरफ छात्र-छात्राओं ने एचएसएलसी परीक्षा में सफलता हासिल कर ली है, वहीं दूसरी तरफ जनता ने रिकॉर्ड मतदान कर नेताओं के भविष्य को ईवीएम में बंद कर दिया है। अब पूरा राज्य एक ही बात कह रहा है कि 'भांजा-भांजियां' (छात्र-छात्राएं) पास हो गए, अब 'मामा' (मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा) का रिजल्ट बाकी है।

दरअसल, 9 अप्रैल को हुए मतदान में असम ने लोकतंत्र के प्रति मजबूत भागीदारी दिखाई। शाम 6 बजे तक 85.13 फीसदी मतदान दर्ज हुआ, जो 2021 के मुकाबले ज्यादा है। बारिश और बादलों के बावजूद वोटिंग केंद्रों पर लंबी कतारें लगी रहीं। इस बार सबसे बड़ी बात यह रही कि ग्रामीण क्षेत्रों ने शहरी इलाकों को साफ तौर पर पीछे छोड़ दिया। कई सीटों पर 90 फीसदी से ज्यादा मतदान दर्ज हुआ, जिससे साफ है कि

गांवों में वोटिंग का उत्साह सबसे ज्यादा रहा।

दूसरी ओर, मतदान के ठीक दूसरे दिन असम राज्य स्कूल शिक्षा बोर्ड (एएसएसईबी) ने एचएसएलसी 2026 के परिणाम घोषित कर दिए। इस वर्ष 65.62 प्रतिशत छात्र पास हुए, जो पिछले साल से बेहतर प्रदर्शन है। डिमा हसाओ ने 88.23 प्रतिशत के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया, जबकि कछार सबसे पीछे रहा। शिवसागर और डिब्रूगढ़ ने भी मजबूत प्रदर्शन किया।

जस्टिस यशवंत वर्मा ने भारी मन से छोड़ी 'न्याय की कुर्सी'

प्रयागराज। नई दिल्ली स्थित बंगले में जले हुए नोट मिलने के बाद चर्चित हुए न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने अंतत: इस्तीफा दे दिया। नोटों के जलने की घटना के साल भर बाद उन्होंने यह कदम उठाया है। अपना इस्तीफा राष्ट्रपति को भेजा है। उसकी प्रतिलिपि भारत के मुख्य न्यायमूर्ति **शेष पृष्ठ 8 पर**

हिमंत मॉडल की परीक्षा, रिजल्ट चार को

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

पूर्वोत्तर की राजनीति का केंद्र माने जाने वाले असम में मतदान संपन्न हो चुका है और अब पूरा राज्य नतीजों की प्रतीक्षा में है। यह चुनाव केवल सरकार बदलने या बचाने की लड़ाई नहीं, बल्कि असम की सामाजिक पहचान, विकास की दिशा और राजनीतिक संतुलन तय करने वाला माना जा रहा है।

इस बार का चुनाव मूल रूप से दो ध्रुवों के बीच केंद्रित रहा-

सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दल तथा कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी गठबंधन।

रिकॉर्ड 85.13 फीसदी मतदान

9 अप्रैल को हुए मतदान में मौसम की बाधाओं के बावजूद जनता का उत्साह चरम पर रहा। शाम 6 बजे तक 85.13 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया, जो पिछले चुनाव (82.04 प्रतिशत) से अधिक है। ग्रामीण इलाकों ने इस बार शहरी क्षेत्रों को **शेष पृष्ठ 8 पर**

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा इस चुनाव के सबसे प्रमुख चेहरे रहे। उनके नेतृत्व में भाजपा ने चुनाव को स्थिरता + तेज विकास बनाम अव्यवस्था + पुरानी राजनीति के फ्रेम में पेश किया।

वहीं कांग्रेस ने इसे जनता बनाम सत्ता का चुनाव बताते हुए महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक ध्रुवीकरण को मुख्य मुद्दा बनाया।

असम की राजनीति में पहचान हमेशा निर्णायक रही है, और इस बार भी यह मुद्दा केंद्र में रहा।

मुख्य सवाल रहे: अवैध घुसपैठ और एनआरसी /नागरिकता, सीएए को लेकर असमिया समाज की आशंकाएं, भाषा और सांस्कृतिक अस्मिता। ऊपरी असम में जहां असमिया पहचान का मुद्दा प्रभावी रहा, वहीं निचले असम में धार्मिक और सामुदायिक समीकरण ज्यादा अहम दिखे।

अंदर पढ़ें

2. अमरनाथ सेवा समिति की श्रद्धालुओं संग भक्ति यात्रा
3. हिमंत का दावा : 90 से अधिक सीटों पर मिलेगी जीत
4. ममता बनाम मोदी
5. बिहार की राजनीति छोड़ दिल्ली पहुंचे नीतीश
6. संविधान के जनक डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर
7. बंगाल में यूसीसी, महिलाओं को 3000
8. राघव चड्ढा : 'साइलेंट साइडलाइनिंग' का शिकार
9. नाटो में दरार : ट्रंप के रुख से वैश्विक सुरक्षा ढांचे पर संकट
10. नौवीं से छात्रों को एडवांस मैथ और साइंस का विकल्प
11. विराट होता सूर्यवंशी का *वैभव*

मैट्रिक परिणाम

बरपेटा का ज्योतिर्मय दास टॉपर

एचएसएलसी 2026 के परिणाम के अनुसार बरपेटा जिले के मेधावी छात्र ज्योतिर्मय दास ने 591 अंक प्राप्त कर राज्य में प्रथम स्थान हासिल किया। उनकी इस उपलब्धि से पूरे जिले में खुशी का माहौल है।

टॉपर्स की सूची

पहला स्थान : ज्योतिमय दास (शंकरदेव शिशु निकेतन, पाटाचरकुची-बजाली)
दूसरा स्थान : आकांक्षा भुइयां (अंबिकागिरी राय चौधरी जातीय विद्यालय, बिश्वनाथ)
तीसरा स्थान (संयुक्त): जिया फराह इस्लाम (लिटिल फ्लावर एचएस स्कूल, डिब्रूगढ़) सुरजीत अख्तर (लिटिल फ्लावर स्कूल, नलबाड़ी)

परीक्षा से जुड़े आंकड़े

कुल छात्र : 4,38,564
परीक्षा में बैठ : 4,29,249
कुल पास : 2,81,701
अनुपस्थित : 9,315
परिणाम रोके गए : 5
निष्कासित : 135
लड़के : 67.78% पास
लड़कियां : 63.96% पास

डिवीजन

प्रथम श्रेणी : 85,189 छात्र
द्वितीय श्रेणी : 1,50,167 छात्र
तृतीय श्रेणी : 46,345 छात्र
डिस्टिंक्शन : 3,983 छात्र
स्टार मार्क्स :13,681 छात्र
लेटर मार्क्स : 99,052 छात्र

जिला प्रदर्शन

टॉपर : डिमा हसाओ : 88.23%
सबसे कम : कछार: 49.13%

महत्वपूर्ण जानकारी

कंपार्टमेंट परीक्षा : मई 2026 में आयोजित होगी, वे छात्र पात्र होंगे जो अधिकतम 3 विषयों में फेल हुए हैं और कुल 170 अंक प्राप्त किए हैं।

अमरनाथ सेवा समिति की श्रद्धालुओं संग भक्ति यात्रा

हयग्रीव माधव व केदारनाथ मंदिर में किए दर्शन

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

श्री अमरनाथ सेवा समिति के तत्वावधान में वशिष्ठ चारिआली स्थित प्रभा देवी हिंदी स्कूल प्रांगण से श्रद्धालुओं का एक भव्य जत्था हयग्रीव माधव मंदिर एवं केदारनाथ मंदिर के दर्शन हेतु रवाना हुआ। इस धार्मिक यात्रा में 100 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जिनके लिए दो बसों की सुव्यवस्थित व्यवस्था की गई थी।

पूरी यात्रा के दौरान 'हर-हर महादेव' और 'जय श्रीराम' के जयकारों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता था। यात्रा का पहला पड़ाव लंकेश्वर क्षेत्र के गणेश मंदिर, लक्ष्मी मंदिर, शनि मंदिर और हनुमान मंदिर रहे, जहां विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर सभी ने आगे की यात्रा प्रारंभ की।

इसके पश्चात श्रद्धालु हयग्रीव माधव मंदिर पहुंचे, जहां ऊंची सीढ़ियां चढ़कर भक्तों ने भगवान के दर्शन किए। मंदिर परिसर में स्थित विशाल पोखर में तैरती मछलियां और कछुए श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बने। दर्शन के उपरांत समिति द्वारा दही-चूड़ा का प्रसाद वितरित किया गया, जिसे सभी ने श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया।

प्रसाद ग्रहण करने के बाद श्रद्धालु केदारनाथ मंदिर के लिए रवाना हुए। मंदिर से लगभग एक किलोमीटर पहले बस रोककर सभी भक्त पैदल ही दर्शन के लिए पहुंचे। इस दौरान श्रद्धालुओं ने प्रसिद्ध भीम कटोरा का भी दर्शन किया और धार्मिक अनुभूति प्राप्त की।

यह संपूर्ण यात्रा श्रद्धा, भक्ति और भारतीय धार्मिक परंपराओं की जीवंत झलक प्रस्तुत करती है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने एकजुट होकर आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव किया।

कामरूप की धरती पर रावण की तपस्या

मान्यता है कि लंकापति रावण जब कैलाश पर्वत से शिवलिंग लेकर लंका जा रहा था, तब एक युक्ति के तहत भगवान गणेश ने उस शिवलिंग को झारखंड क्षेत्र में स्थापित कर दिया, जो आज बाबा धाम के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद रावण निराश होकर कामरूप (वर्तमान असम) आया और यहां कठोर साधना में लीन हो गया। उसकी तपस्या से उसे महामाया और इंद्रजाल जैसी दिव्य विद्याओं की प्राप्ति हुई।

समाजसेवी तारकेश्वर तिवारी का निधन, शोक की लहर

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

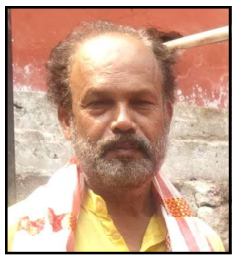

महानगर के वशिष्ठ चारिआली के व्यवसायी व समाजसेवी तारकेश्वर तिवारी का गत पांच अप्रैल की शाम निधन हो गया। अचानक बीमार पड़ने पर उन्हें एक निजी अस्पताल में ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनकी मृत्यु हृदय गति के रुकने के कारण हुई। उनके निधन से इलाके में शोक की लहर है। वे छठ पूजा सेवा समिति समेत विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए थे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बिहू : उत्सव से आगे

-ये तीनों पहलू हमें एक संतुलित जीवन का मार्ग दिखाते हैं। आज जब आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं, तब यह पर्व हमें ठहरकर सोचने का अवसर देता है।

वर्तमान समय में बिहू के आयोजन बड़े और भव्य होते जा रहे हैं, लेकिन कहीं न कहीं इसकी आत्मा-सादगी और अपनापन-कम होती दिखाई देती है। सामाजिक प्रतिस्पर्धा, दिखावा और व्यावसायिकता ने इस लोकपर्व को भी प्रभावित किया है। यह चिंतन का विषय है कि क्या हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को उसी पवित्रता से आगे बढ़ा पा रहे हैं, जैसी हमें विरासत में मिली थी?

साथ ही, रंगाली बिहू हमें एक और महत्वपूर्ण संदेश देता है- समावेशिता का। यह पर्व जाति, भाषा और धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर सभी को एक सूत्र में बांधता है। आज के विभाजित सामाजिक माहौल में यह भावना और भी प्रासंगिक हो जाती है।

इसलिए आवश्यकता है कि हम रंगाली बिहू को केवल एक उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन के रूप में अपनाएं। अपने बच्चों को इसकी परंपराओं, मूल्यों और महत्व से परिचित कराएं, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहें।

अंततः, रंगाली बिहू हमें यही सिखाता है कि नवजीवन केवल प्रकृति में नहीं, बल्कि हमारे विचारों और आचरण में भी आना चाहिए। यदि हम इस संदेश को आत्मसात कर लें, तो यह पर्व वास्तव में हमारे समाज को एक नई दिशा दे सकता है।

साप्ताहिक राशिफल

10 से 16 अप्रैल 2026 ।। विक्रम संवत 2083-**मास** : चैत्र, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : अष्टमी

मेष

यह सप्ताह आपके लिए काफी एक्टिव और प्रोडक्टिव रहेगा। करियर में नई जिम्मेदारियाँ मिल सकती हैं, जो शुरुआत में चुनौतीपूर्ण लगेंगी लेकिन आगे चलकर फायदेमंद साबित होंगी। बिज़नेस करने वालों को नए क्लाइंट मिल सकते हैं।

वृषभ

यह सप्ताह स्थिरता और धैर्य का है। आप धीरे-धीरे अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ेंगे। नौकरी में स्थिरता रहेगी और सीनियर्स से सराहना मिल सकती है।

मिथुन

यह सप्ताह कम्युनिकेशन और नेटवर्किंग के लिए शानदार है। नई जान-पहचान आपके करियर में मदद कर सकती है।

कर्क

इस सप्ताह आपको भावनात्मक संतुलन बनाए रखना होगा। काम में थोड़ी सुस्ती या कन्फ्यूजन हो सकता है। उधार देने से बचें। परिवार का साथ आपको मानसिक शांति देगा। तनाव से बचें, मेडिटेशन फायदेमंद रहेगा।

सिंह

यह सप्ताह आपके लिए सफलता और पहचान लेकर आ सकता है। आपकी लीडरशिप स्किल्स की तारीफ होगी। प्रमोशन या नई जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक लाभ के योग हैं। पार्टनर के साथ रिश्ता मजबूत होगा। ऊर्जा अच्छी रहेगी।

कन्या

काम में परफेक्शन की आपकी आदत इस हफ्ते आपको आगे बढ़ाएगी। ऑफिस में आपकी मेहनत नजर आएगी, लेकिन काम का बोझ बढ़ सकता है। खर्चों पर नियंत्रण रखें। रिश्तों में थोड़ा समय देना जरूरी है।

तुला

यह सप्ताह बैलेंस बनाने का है। आप काम और पर्सनल लाइफ दोनों को अच्छे से संभाल पाएंगे। नई पार्टनरशिप या सहयोग मिल सकता है। धन लाभ के योग हैं। रिलेशनशिप में मिठास बढ़ेगी।

वृश्चिक

यह सप्ताह आपके लिए ट्रांसफॉर्मेशन का समय है। आप कुछ बड़े फैसले ले सकते हैं। करियर में ग्रोथ होगी, लेकिन मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ेगी। अचानक धन लाभ हो सकता है।

धनु

यह सप्ताह सीखने और एक्सप्लोर करने का है। नई स्किल्स सीखने का मौका मिलेगा। निवेश सोच-समझकर करें। दोस्तों और पार्टनर के साथ अच्छा समय बीतेगा। यात्रा के योग हैं।

मकर

यह सप्ताह मेहनत और अनुशासन का है। काम का दबाव बढ़ेगा, लेकिन आपकी मेहनत रंग लाएगी। आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी।

कुंभ

यह सप्ताह क्रिएटिविटी और नए आइडियाज से भरा रहेगा। नए प्रोजेक्ट शुरू हो सकते हैं। इनकम के नए सोर्स बन सकते हैं। रिलेशनशिप में पॉजिटिव बदलाव आएंगे। यात्रा या पढ़ाई के योग हैं।

मीन

यह सप्ताह आपके लिए इंट्यूशन और आध्यात्मिकता का है। फैसले लेने में आपका अंदरूनी ज्ञान मदद करेगा। आर्थिक सुधार होगा। रिश्तों में प्यार और समझ बढ़ेगी।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

10 अप्रैल शुक्रवार : श्री शीतलाष्टमी व्रत
13 अप्रैल सोमवार : वरुथिनी एकादशी व्रत
श्री बल्लाभाचार्य जयंती
15 अप्रैल बुधवार : प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत

भाग्योदय Bhagyoday Astrology
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

हिमंत का दावा : 90 से अधिक सीटों पर मिलेगी जीत

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव 2026 में इस बार रिकॉर्ड तोड़ मतदान ने राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि राज्य में लोगों ने 'असामान्य उत्साह' के साथ मतदान किया है, जो लोकतंत्र के प्रति गहरी आस्था को दर्शाता है।

मुख्यमंत्री के अनुसार इस बार मतदान में खास बात यह रही कि सभी समुदायों ने बराबरी से हिस्सा लिया। गोलकगंज जैसे क्षेत्रों में हिंदू और अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में लगभग समान मतदान दर्ज हुआ, जबकि कई बूथों पर 95त्न तक वोटिंग हुई। यह संकेत देता है कि चुनाव को लेकर जनता में व्यापक जागरूकता और दिलचस्पी है।

126 सीटों वाले असम में इस बार मतदान प्रतिशत पिछले चुनावों से काफी अधिक रहा है। राजनीतिक दल इसे अपने-अपने पक्ष में जनसमर्थन के रूप में देख रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लोगों ने इस बार बढ़-चढ़कर मतदान किया है, जो बहुत सकारात्मक संकेत है।

मुख्यमंत्री ने भरोसा जताया कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाला गठबंधन इस बार स्पष्ट बहुमत से आगे बढ़ेगा। उनके मुताबिक, गठबंधन 90 से अधिक सीटें जीत सकता है और यदि 100 सीटों का आंकड़ा भी पार हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हालांकि उन्होंने कहा कि अंतिम परिणाम तक धैर्य रखना जरूरी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष इस बार ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ पाएगा। कांग्रेस 20 सीटों से नीचे रह सकती है, एआईयूडीएफ को 4-5 सीटें मिल सकती हैं। 'तीन गोगोई' का मुद्दा भी जनता को प्रभावित नहीं कर पाया, ऐसा उनका कहना है।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा के आरोपों को मुख्यमंत्री ने बेबुनियाद बताते हुए खारिज किया। उन्होंने कहा कि बिना प्रमाण के आरोप लगाना राजनीतिक रणनीति का हिस्सा बन गया है।

असम में इस बार का चुनाव जनता की अभूतपूर्व भागीदारी का गवाह बना है।

भारी मतदान ने सभी समीकरण बदल दिए हैं, लेकिन असली तस्वीर अब 4 मई को ही सामने आएगी।

तेलंगाना हाईकोर्ट से पवन खेड़ा को अंतरिम राहत

गुवाहाटी/हैदराबाद। कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता पवन खेड़ा को असम पुलिस द्वारा दर्ज मामले में बड़ी राहत मिली है। तेलंगाना हाई कोर्ट ने उन्हें एक सप्ताह की ट्रांजिट अग्रिम जमानत प्रदान की है, जिससे उन्हें संबंधित अदालत में नियमित अग्रिम जमानत याचिका दाखिल करने का समय मिल गया है।

न्यायमूर्ति सुजना कलासिकम की अदालत ने अपने आदेश में कहा कि याचिकाकर्ता को एक सप्ताह के भीतर सक्षम न्यायालय में आवेदन करने का अवसर दिया जाता है और इस दौरान उन्हें अंतरिम सुरक्षा प्रदान की जाती है।

यह विवाद उस समय शुरू हुआ जब पवन खेड़ा ने 5 अप्रैल को डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की पत्नी रिनिकी भुइयां शर्मा पर कई गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि उनके पास कई पासपोर्ट और विदेशों में संपत्ति है, जिनका खुलासा चुनावी हलफनामे में नहीं किया गया।

इन आरोपों के आधार पर रिनिकी भुइयां ने गुवाहाटी क्राइम ब्रांच थाने में मामला दर्ज किया है, जिसमें भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराएं शामिल हैं।

खेड़ा की ओर से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि यह मामला राजनीतिक प्रतिशोध का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि यदि बयान गलत भी साबित होता है, तो यह अधिकतम मानहानि का मामला बनता है, गिरफ्तारी की जरूरत नहीं है।

वहीं, असम सरकार की ओर से महाधिवक्ता देवजीत सैकिया ने इस याचिका की वैधता पर सवाल उठाते हुए कहा कि खेड़ा को असम में ही जमानत के लिए आवेदन करना चाहिए था।

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने पुलिस कार्रवाई का समर्थन करते हुए कहा कि पुलिस कानून की पालनकर्ता है और एफआईआर दर्ज होने के बाद कार्रवाई करना उसका कर्तव्य है। उन्होंने यह भी कहा कि कानून के तहत पुलिस किसी भी आरोपी तक पहुंचने के लिए बाध्य है।

इस पूरे घटनाक्रम ने असम की राजनीति में गर्माहट ला दी है। कांग्रेस और भाजपा के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है।

उत्साह के साथ मना हनुमान जन्मोत्सव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

लालगणेश मंदिर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के पावन अवसर पर हनुमान जन्मोत्सव (हनुमान जयंती) श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया गया। पूरे मंदिर परिसर में धार्मिक वातावरण और भक्ति की सरिता प्रवाहित होती रही।

कार्यक्रम की शुरुआत 'जय गणपति बाबा मोरिया, मंगलमूर्ति मोरिया' के जयकारों के साथ हुई, जिससे माहौल भक्तिमय हो उठा। इस अवसर पर भजन-कीर्तन आयोजन का प्रमुख आकर्षण रहा, जिसमें महिला मंडल की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली।

महिला मंडल की सदस्याओं ने भजन, कीर्तन और मुस्कुराहट के साथ बड़े प्रेम और भाव से लाड़ले हनुमान का जन्मोत्सव मनाया। पूरे आयोजन के दौरान भोलेनाथ के रुद्र अवतार हनुमान जी के जयकारों से मंदिर परिसर गूंजता रहा।

कार्यक्रम में विभिन्न भाषाओं और समुदायों की महिलाओं ने एक साथ मिलकर जयकारे लगाए, जो सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विविधता का सुंदर उदाहरण बना।

इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन न केवल आस्था को मजबूत करते हैं, बल्कि समाज में प्रेम, भाईचारे और सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी करते हैं।

मणिपुरी बस्ती में भी मना हनुमान जन्मोत्सव

गुवाहाटी। मणिपुरी बस्ती स्थित हनुमान मंदिर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के पावन अवसर पर हनुमान जन्मोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। पूरे वातावरण में धार्मिक उल्लास और आस्था का अद्भुत संगम देखने को मिला।

उत्सव के दौरान जयकारों से मंदिर परिसर भक्ति रस में डूब गया। भजन-कीर्तन इस आयोजन का प्रमुख आकर्षण रहा, जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मंडल के सदस्यों और भक्तों ने मिलकर पूरे विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना संपन्न की। कार्यक्रम के दौरान हनुमान जी के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। विभिन्न भाषाओं और समुदायों के लोगों ने एकजुट होकर भारत माता के जयकारे लगाए, जो सामाजिक समरसता और एकता का प्रतीक बना।

।। शोक संदेश ।।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

जन्म : 09 जून, 1971

स्वर्गवास : 05 अप्रैल, 2026

स्व. तारकेश्वर तिवारी

अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि हमारे प्रिय अमरनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष **तारकेश्वर तिवारी जी** का आकस्मिक निधन दिनांक 05 अप्रैल 2026, रविवार को हो गया। उनके आकस्मिक निधन से उनके परिजनों के साथ ही अमरनाथ सेवा समिति के सदस्यगण अत्यंत मर्माहत हैं।

उनका एकादशा दिनांक 15 अप्रैल 2026, बुधवार तथा द्वादशा 16 अप्रैल 2026, वृहस्पतिवार को बिहार स्थित उनके पैतृक निवास पर संपन्न होगा।

अमरनाथ सेवा समिति उनकी धर्मपत्नी सुनीता देवी, सुपुत्रों रविकांत तिवारी व शनिकांत तिवारी तथा सुपुत्री मनीषा तिवारी समेत समस्त शोकाकुल परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती है। समिति इस दुःख की घड़ी में उनके परिवार के साथ है। भगवान उनके परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें तथा पुण्य आत्मा को शांति प्रदान करें।

- शोकाकुल -
अमरनाथ सेवा समिति, गुवाहाटी

संपादकीय

बंपर मतदान का संदेश

असम, केरल और पुडुचेरी में हुए विधानसभा चुनावों में इस बार रिकॉर्ड मतदान ने लोकतंत्र की मजबूती को साफ तौर पर दिखाया है। औसतन 80 प्रतिशत से अधिक मतदान यह संकेत देता है कि जनता अब पहले से अधिक जागरूक और सक्रिय हो चुकी है। लोग न केवल राजनीतिक घटनाओं को समझ रहे हैं, बल्कि अपने मताधिकार का उपयोग करने के लिए भी गंभीर हैं।

असम में 85 प्रतिशत से अधिक मतदान और कई क्षेत्रों में 90 प्रतिशत के पार पहुंचना बताता है कि जहां मुकाबला कड़ा होता है, वहां जनता ज्यादा उत्साह दिखाती है। केरल में परंपरागत राजनीतिक टक्कर के बीच भी मतदान बढ़ा है, जबकि पुडुचेरी में लगभग 90 प्रतिशत मतदान यह दर्शाता है कि स्थानीय मुद्दों ने मतदाताओं को प्रभावित किया है।

हालांकि, बड़ा सवाल यही है कि क्या यह भारी मतदान सत्ता परिवर्तन का संकेत है या फिर मौजूदा सरकार के प्रति विश्वास का? विशेषज्ञों की राय इस पर बंटी हुई है। कुछ इसे बदलाव की लहर मानते हैं, तो कुछ इसे स्थिरता का संकेत बताते हैं।

इसलिए यह कहना जल्दबाजी होगी कि जनादेश किस दिशा में जाएगा। फिलहाल इतना जरूर कहा जा सकता है कि जनता ने लोकतंत्र में अपनी भागीदारी को मजबूती दी है। अब सबकी नजर मतगणना पर है, जहां असली तस्वीर सामने आएगी।

सुलगता सवाल? आपके विचार

कहां गए शांति के कपोत उड़ाने वाले

आज की दुनिया एक बार फिर युद्ध की आग में झुलस रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई बार कहा कि दुनिया को युद्ध नहीं, बुद्ध की जरूरत है, लेकिन वैश्विक मंचों पर यह आवाज कमजोर पड़ती दिख रही है। यूएनओजैसी संस्थाएं भी इस बढ़ते तनाव के सामने बेबस नजर आती हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध हो या मध्य पूर्व में ईरान, इजरायल और अमेरिका के बीच टकराव-हर जगह बारूद की गूंज है। इन संघर्षों में जीत किसी की भी हो, हार हमेशा मानवता की होती है। मासूम बच्चों की चीखें, बेघर होती महिलाएं और उजड़ते परिवार इस सच्चाई के गवाह हैं।

युद्ध सिर्फ जानें नहीं लेता, बल्कि अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और भविष्य को भी तबाह कर देता है। महंगाई बढ़ती है, खाद्य संकट गहराता है और संसाधनों की बर्बादी होती है। जिन पैसों से शिक्षा और स्वास्थ्य सुधर सकते थे, वे हथियारों पर खर्च हो रहे हैं।

डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेताओं के बयानों ने हालात को और जटिल बना दिया है, जहां तेल और संसाधनों की राजनीति युद्ध को बढ़ावा देती दिखती है। इससे साफ होता है कि वैश्विक शक्ति संतुलन के पीछे अक्सर स्वार्थ छिपा होता है।

इतिहास गवाह है-युद्ध कभी स्थायी समाधान नहीं देता। यह केवल नई समस्याओं को जन्म देता है। आज जरूरत है कि विश्व के शक्तिशाली देश संवाद और कूटनीति का रास्ता अपनाएं।

अगर अभी भी शांति की पहल नहीं हुई, तो आने वाली पीड़ियां हमें उस दौर के रूप में याद करेंगी, जहां इंसान बचा रहा, लेकिन इंसानियत खो गई।

-शंकर कुमार साह, गुवाहाटी

ममता बनाम मोदी

जन जन विचार
...✍ दिव्यांश

भारतीय लोकतंत्र की सबसे दिलचस्प और जटिल कहानियों में अगर किसी एक राजनीतिक टकराव को सबसे अधिक तीखा, व्यक्तिगत और दीर्घकालिक कहा जाए, तो वह निस्संदेह नरेंद्र मोदी और ममता बनर्जी के बीच का संघर्ष है। यह केवल चुनावी प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि एक ऐसी राजनीतिक कथा बन चुकी है, जिसने पश्चिम बंगाल की पूरी राजनीतिक संरचना को बदल दिया है।

यह कहानी सत्ता के बदलाव से शुरू होकर आज विचारों की निर्णायक लड़ाई तक पहुंच चुकी है। 2011 में जब ममता बनर्जी ने वाम मोर्चे के तीन दशक लंबे शासन को समाप्त किया, तब बंगाल की राजनीति में एक नए युग की शुरुआत हुई। उस समय उनकी छवि एक जुझारू, जमीनी और बदलाव की प्रतीक नेता की थी। लेकिन राजनीति कभी स्थिर नहीं रहती। 2014 में नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय स्तर पर उभार ने बंगाल को भी एक नई राजनीतिक दिशा दी। शुरुआत में दोनों के बीच एक प्रकार की राजनीतिक दूरी और सावधानी थी, लेकिन जल्द ही यह दूरी टकराव में बदल गई और फिर टकराव स्थायी हो गया।

इस टकराव की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसने बंगाल की राजनीति को लगभग द्विध्रुवीय बना दिया। जहां कभी वाम और कांग्रेस जैसे दल मुख्य खिलाड़ी हुआ करते थे, आज वे हाशिये पर सिमट गए हैं। पूरा राजनीतिक विमर्श अब दो ध्रुवों तृणमूल कांग्रेस और भाजपा के इर्द-गिर्द घूमता है। यह परिवर्तन केवल दलों के स्तर पर नहीं, बल्कि मतदाताओं की सोच और चुनावी रणनीतियों में भी गहराई से दिखाई देता है।

ममता बनर्जी और नरेंद्र मोदी दोनों की राजनीतिक शैली जितनी अलग है, उतनी ही प्रभावशाली भी। ममता बनर्जी की राजनीति सड़कों से निकली है; वह विरोध, आंदोलन और प्रतिरोध की भाषा बोलती हैं। उनके लिए राजनीति केवल सत्ता नहीं, बल्कि पहचान और अस्मिता की लड़ाई है। दूसरी ओर, नरेंद्र मोदी एक केंद्रीकृत, निर्णायक और बड़े फैसलों वाले नेता के रूप में अपनी छवि गढ़ते हैं। उनके लिए राजनीति राष्ट्रीय दृष्टि और व्यापक परिवर्तन का माध्यम है। यही दो अलग-अलग दृष्टिकोण जब आमने-सामने आते हैं, तो टकराव केवल नीतियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि एक वैचारिक संघर्ष में बदल जाता है।

> ममता बनर्जी और नरेंद्र मोदी के बीच यह संघर्ष अब केवल चुनावी जीत-हार तक सीमित नहीं रहा। यह एक ऐसे राजनीतिक युग का प्रतीक बन चुका है, जहां व्यक्तित्व, विचार और सत्ता-तीनों एक साथ टकराते हैं। और शायद यही कारण है कि बंगाल की राजनीति आज पूरे देश के लिए एक प्रयोगशाला बन गई है, जहां हर चुनाव केवल सरकार नहीं, बल्कि राजनीतिक दिशा तय करता है।

इस संघर्ष का एक और महत्वपूर्ण पहलू इसकी भाषा और तीव्रता है। पिछले एक दशक में दोनों नेताओं के बीच जो शब्दों का आदान-प्रदान हुआ है, वह भारतीय राजनीति में दुर्लभ है। ममता बनर्जी ने कई बार बेहद तीखे और व्यक्तिगत हमले किए हैं, जबकि नरेंद्र मोदी ने भी अपने तरीके से व्यंग्य और आरोपों के जरिए जवाब दिया है। हालांकि हाल के वर्षों में मोदी की भाषा में कुछ संयम दिखाई देता है, लेकिन राजनीतिक आरोपों की धार कम नहीं हुई है। यह पूरा परिदृश्य दर्शाता है कि बंगाल की राजनीति अब भावनात्मक और व्यक्तिगत अपील के स्तर तक पहुंच चुकी है, जहां तर्क से अधिक प्रभाव छवि और संदेश का होता है।

आज बंगाल में चुनाव केवल विकास, रोजगार या योजनाओं के मुद्दों पर नहीं लड़े जाते, बल्कि एक बड़े नैरेटिव के तहत लड़े जाते हैं। भाजपा जहां भ्रष्टाचार, घुसपैठ और प्रशासनिक विफलताओं को केंद्र में रखती है, वहीं तृणमूल कांग्रेस संघीय ढांचे की रक्षा, केंद्र के हस्तक्षेप और एजेंसियों के दुरुपयोग जैसे मुद्दों को उठाती है। हाल ही में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर उठा विवाद इसी नैरेटिव युद्ध का नया अध्याय है, जिसने चुनावी माहौल को और अधिक तीखा और विभाजित बना दिया है।

इस पूरी राजनीति का सबसे गहरा प्रभाव राज्य के सामाजिक और राजनीतिक ताने-बाने पर पड़ा है। बंगाल, जो कभी वैचारिक बहुलता और राजनीतिक संतुलन के लिए जाना जाता था, आज स्पष्ट ध्रुवीकरण की ओर बढ़ता दिखता है। यह ध्रुवीकरण एक तरफ राजनीतिक स्थिरता और स्पष्ट विकल्प देता है, तो दूसरी तरफ संवाद और मध्य मार्ग की संभावनाओं को कमजोर भी करता है।

यही वह बिंदु है, जहां यह सवाल उठता है कि क्या यह लगातार टकराव लोकतंत्र के लिए स्वस्थ है? एक दृष्टिकोण यह कहता है कि तीखी प्रतिस्पर्धा लोकतंत्र को जीवंत और सक्रिय बनाए रखती है। लेकिन दूसरा पक्ष यह भी मानता है कि अत्यधिक ध्रुवीकरण समाज को विभाजित करता है और नीतिगत बहस को पीछे धकेल देता है।

ममता बनर्जी और नरेंद्र मोदी के बीच यह संघर्ष अब केवल चुनावी जीत-हार तक सीमित नहीं रहा। यह एक ऐसे राजनीतिक युग का प्रतीक बन चुका है, जहां व्यक्तित्व, विचार और सत्ता-तीनों एक साथ टकराते हैं। और शायद यही कारण है कि बंगाल की राजनीति आज पूरे देश के लिए एक प्रयोगशाला बन गई है, जहां हर चुनाव केवल सरकार नहीं, बल्कि राजनीतिक दिशा तय करता है।

अंततः, यह द्वंद्व हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि लोकतंत्र में टकराव की सीमा क्या होनी चाहिए और क्या राजनीति का उद्देश्य केवल जीतना है, या समाज को साथ लेकर आगे बढ़ना भी उतना ही जरूरी है।

बिहार की राजनीति छोड़ दिल्ली पहुंचे नीतीश

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

बिहार के लंबे समय से मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार ने 10 अप्रैल को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ली, जिससे राज्य में एक बड़े नेतृत्व परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने राज्यसभा अध्यक्ष सीपी राधाकृष्णन के कक्ष में उच्च सदन के सदस्य के रूप में शपथ ली। नीतीश कुमार के राज्यसभा में पदभार ग्रहण करने के साथ ही बिहार में उनका लंबा कार्यकाल समाप्त हो गया। सत्तारूढ़ एनडीए अब 14 अप्रैल को राज्य के नए मुख्यमंत्री का चुनाव कर सकता है। नीतीश कुमार ने राज्य विधान परिषद के सदस्य पद से पहले ही इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने राज्यसभा के लिए चुने जाने के बाद 30 मार्च को पद छोड़ दिया था।

जेडीयू प्रमुख 16 मार्च को उच्च सदन के लिए चुने गए थे और उन्हें चुनाव के बाद निर्धारित 14 दिनों के भीतर एमएलसी पद से इस्तीफा देना आवश्यक था। कुमार 9 अप्रैल को राष्ट्रीय राजधानी पहुंचे और हवाई अड्डे पर जद(यू) के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा सहित पार्टी के नेताओं ने उनका स्वागत किया। कुमार ने हवाई अड्डे पर पत्रकारों से कहा कि मैं यहां शपथ लेने आया हूं। कुमार के राज्यसभा सदस्य बनने के साथ ही बिहार में उनका शासनकाल समाप्त हो जाएगा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) 14 अप्रैल को बिहार के नए मुख्यमंत्री का चुनाव कर सकता है।

बिहार के मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि नीतीश कुमार राज्यसभा के लिए चुने जाने के बाद शपथ लेंगे और जल्द ही मुख्यमंत्री पद छोड़ देंगे। चौधरी ने कहा कि बिहार में राजग सरकार बनेगी और निश्चित रूप से नीतीश कुमार द्वारा बनाए गए नीतीश मॉडल का अनुसरण करेगी, जैसा कि पिछले 20 वर्षों से होता आ रहा है।'

कुमार राज्य विधान परिषद की सदस्यता से पहले ही इस्तीफा दे चुके हैं। राज्यसभा के लिए निर्वाचन के बाद उन्होंने 30 मार्च को विधान परिषद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। जनता दल (यूनाइटेड) सुप्रीमो 16 मार्च को संसद के ऊपरी सदन के लिए निर्वाचित हुए थे।

नीतीश के अनुभव से बढ़ेगी संसद की गरिमा : मोदी

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण कर लिया है। नीतीश कुमार के शपथ लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा-'नीतीश कुमार जी देश के सबसे अनुभवी नेताओं में से एक हैं। सुशासन को लेकर उनकी प्रतिबद्धता की हर तरफ सराहना हुई है। उन्होंने बिहार के विकास में अमिट योगदान दिया है। उन्हें एक बार फिर संसद में देखना बहुत सुखद होगा।'

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे लिखा, 'सांसद और केंद्रीय मंत्री के रूप में भी उन्होंने कई वर्षों तक अपनी सेवाएं दी हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके लंबे राजनीतिक अनुभव से संसद की गरिमा और बढ़ेगी। राज्यसभा सांसद के रूप में शपथ लेने पर उन्हें हार्दिक बधाई और आगे के कार्यकाल के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

इससे पूर्व शपथ ग्रहण से पहले संजय झा, रामनाथ ठाकुर, सम्राट चौधरी समेत अन्य नेताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात की थी। शपथ ग्रहण के दौरान भाजपा और जेडीयू के कई बड़े नेता मौजूद रहे।

'क्लब सिक्स' : लालू की तरह नीतीश भी बने सदस्य

जन जन विचार
...✍ पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के बाद बिहार का 'क्लब फाइव' अब 'क्लब सिक्स' में बदल गया है।

पहले ऐसे पांच नेता थे जो राज्यसभा, लोकसभा, विधानसभा और विधान परिषद चारों सदनों के सदस्य रह चुके हैं। अब नीतीश कुमार इस सूची में छठे सदस्य के रूप में शामिल हो गए हैं।

लालू प्रसाद भी इस क्लब में शामिल

चारों सदनों के सदस्य रह चुके नेताओं की इस सूची में सबसे पहले पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव का नाम आता है।

वह लोकसभा के सदस्य बने, विधायक रहे, राज्यसभा सदस्य भी रहे और मुख्यमंत्री बनने के बाद विधान परिषद के सदस्य बने।

सुशील कुमार मोदी के नाम भी यह रिकॉर्ड

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री रहे दिवंगत सुशील कुमार मोदी के नाम भी यह रिकॉर्ड दर्ज है। वह पटना मध्य से विधायक, भागलपुर से लोकसभा सांसद, विधान परिषद सदस्य और बाद में राज्यसभा सदस्य रहे।

उपेंद्र कुशवाहा भी चारों सदनों के सदस्य

रालोमो सुप्रीमो उपेंद्र कुशवाहा भी इस क्लब में शामिल हैं। वह जंदाहा से विधायक बने, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे, 2014-2019 तक काराकाट से लोकसभा सांसद रहे और 2021-2023 तक विधान परिषद सदस्य रहे। वर्तमान में वह राज्यसभा सदस्य हैं।

रामकृपाल यादव भी सूची में

कृषि मंत्री रामकृपाल यादव इस सूची में पांचवें सदस्य के रूप में शामिल हुए थे। वह दानापुर से विधायक हैं। इससे पहले पाटलिपुत्र से लोकसभा सांसद रह चुके हैं और राज्यसभा व विधान परिषद के भी सदस्य रहे हैं।

संविधान के जनक डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर

जन जन विचार

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर, जिन्हें 'बाबा साहेब' के नाम से भी जाना जाता है, एक महान भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्हें भारतीय संविधान का जनक माना जाता है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

जन्म : उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू में एक 'महार' परिवार में हुआ था, जिसे उस समय अछूत माना जाता था।

उनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल (ब्रिटिश सेना में सूबेदार) और माता का नाम भीमाबाई था।

शिक्षा : डॉ. अंबेडकर ने मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज से स्नातक किया। इसके बाद, उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष : उन्होंने दलितों, महिलाओं और श्रमिकों के अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्ष किया। उन्होंने 'मूक नायक', 'बहिष्कृत भारत' और 'समता' जैसी पत्रिकाएं शुरू कीं।

महाड़ सत्याग्रह : 1927 में उन्होंने दलितों को सार्वजनिक तालाब से पानी पीने का अधिकार दिलाने के लिए सत्याग्रह किया।

संविधान निर्माण : वे भारत की संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे और उन्होंने देश को एक आधुनिक, लोकतांत्रिक और समावेशी संविधान दिया।

प्रथम कानून मंत्री : स्वतंत्र भारत के पहले कानून और न्याय मंत्री के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दीं।

प्रमुख उपलब्धियां और विरासत

धर्म परिवर्तन : समानता की खोज में, उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया था।

भारत रत्न : समाज के प्रति उनके अतुलनीय योगदान के लिए 1990 में उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा गया।

नारा : उनका प्रसिद्ध नारा था— 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो'।

डॉ. अंबेडकर का निधन 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली में उनके निवास स्थान पर हुआ, जिसे 'महापरिनिर्वाण दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

दिमाग लगाओ और खाली बक्सों को भरो

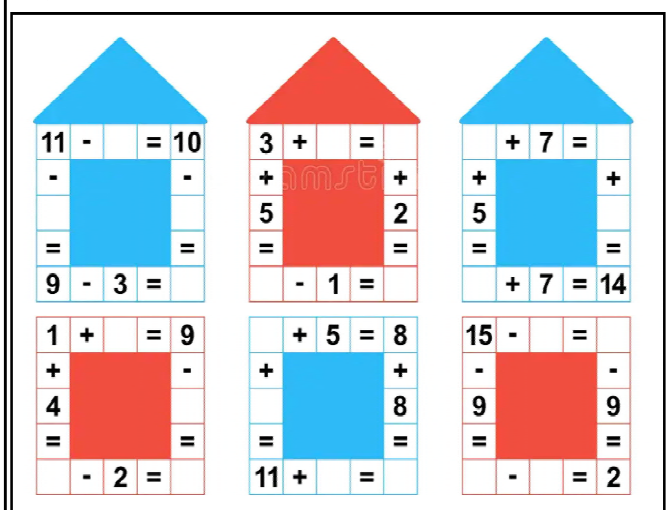

मगरमच्छ को चिड़ियाघर पहुंचने में मदद करें

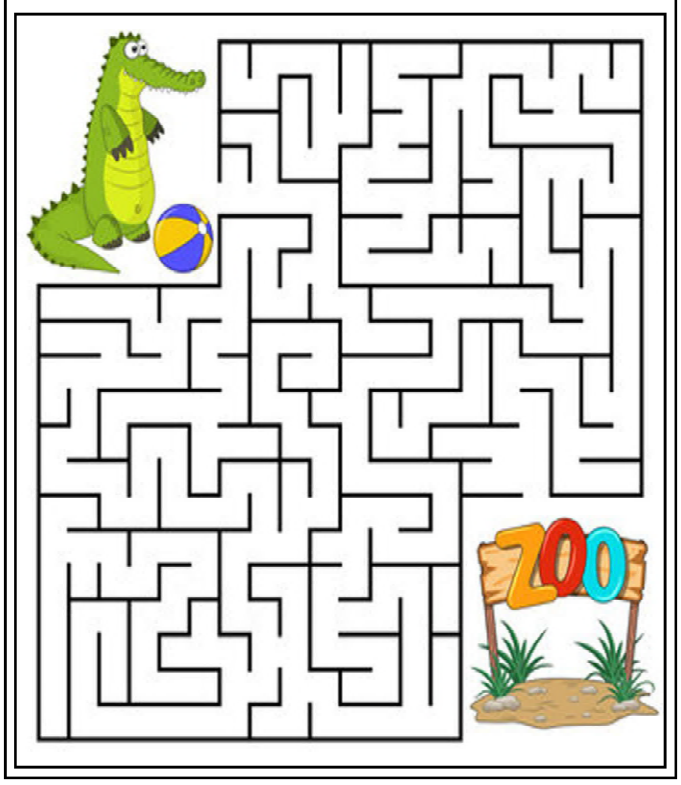

सोना खाने वाला फंगस

ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी गोल्डफील्ड क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने एक ऐसे अनोखे फंगस की खोज की है, जो सोने को 'खा' सकता है और उसे ठोस कणों में बदल देता है। यह फंगस, जिसका नाम Fusarium oxysporum है, अब भविष्य में अंतरिक्ष खनन (Space Mining) के लिए नई संभावनाएं खोल रहा है।

क्या है यह खोज ?

वैज्ञानिकों के अनुसार यह गुलाबी रंग का फंगस जमीन के भीतर मौजूद सोने को घोलकर (dissolve) अपने शरीर की सूक्ष्म संरचनाओं (hyphae) पर सोने के कण जमा कर लेता है।

यह प्रक्रिया एक तरह की प्राकृतिक 'बायो-केमिकल क्रिया' है, जिसमें फंगस सोने को छोटे-छोटे कणों (nanoparticles) में बदल देता है।

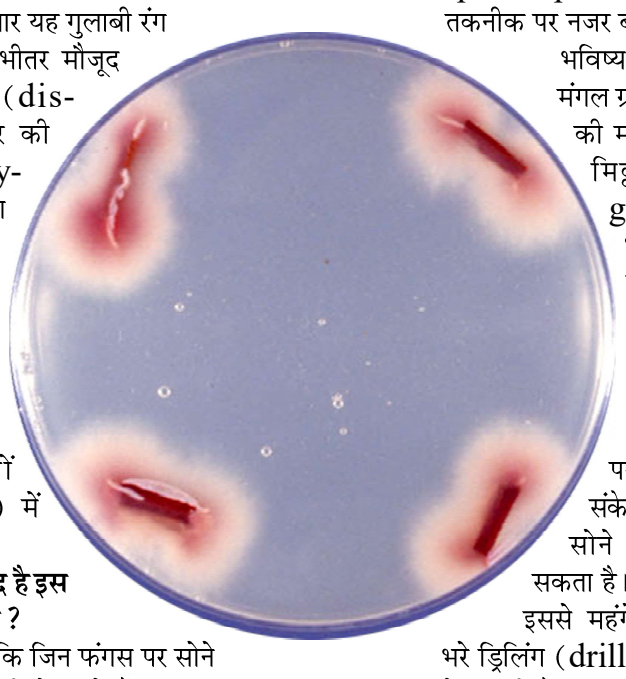

सोना क्यों पसंद है इस फंगस को ?

शोध में पाया गया कि जिन फंगस पर सोने की परत होती है, वे तेजी से बढ़ते हैं।

वैज्ञानिक मानते हैं कि सोना इनके लिए एक 'कैटेलिस्ट' (उत्प्रेरक) की तरह काम करता है, जिससे इनके अंदर की रासायनिक प्रक्रियाएं तेज हो जाती हैं।

खनन में क्रांतिकारी बदलाव

यह खोज पारंपरिक खनन (mining) के तरीके को बदल सकती है।

अब भारी मशीनों की जगह सूक्ष्म जीव (microbes) का उपयोग करके कम खर्च और कम ऊर्जा में कीमती धातुएं निकाली जा सकती हैं।

इस तकनीक को बायो-माइनिंग (Bio-mining) कहा जाता है।

अंतरिक्ष में उपयोग की तैयारी

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा और यूरोपीय एजेंसी European Space Agenc4 इस तकनीक पर नजर बनाए हुए हैं।

भविष्य में चंद्रमा और मंगल ग्रह पर इस फंगस की मदद से वहां की मिट्टी (regolith) से धातुएं निकाली जा सकती हैं।

धरती पर भी बड़ा फायदा

यह फंगस जमीन की सतह पर दिखाई देकर संकेत देता है कि नीचे सोने का भंडार हो सकता है।

इससे महंगे और जोखिम भरे ड्रिलिंग (drilling) कार्य की जरूरत कम हो सकती है।

निष्कर्ष

सोना खाने वाला यह फंगस विज्ञान की दुनिया में एक बड़ी खोज है।

यह न केवल धरती पर खनन को आसान और सस्ता बना सकता है, बल्कि अंतरिक्ष में मानव बस्तियों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बंगाल में यूसीसी, महिलाओं को 3000

अमित शाह ने जारी किया भाजपा का संकल्प पत्र

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

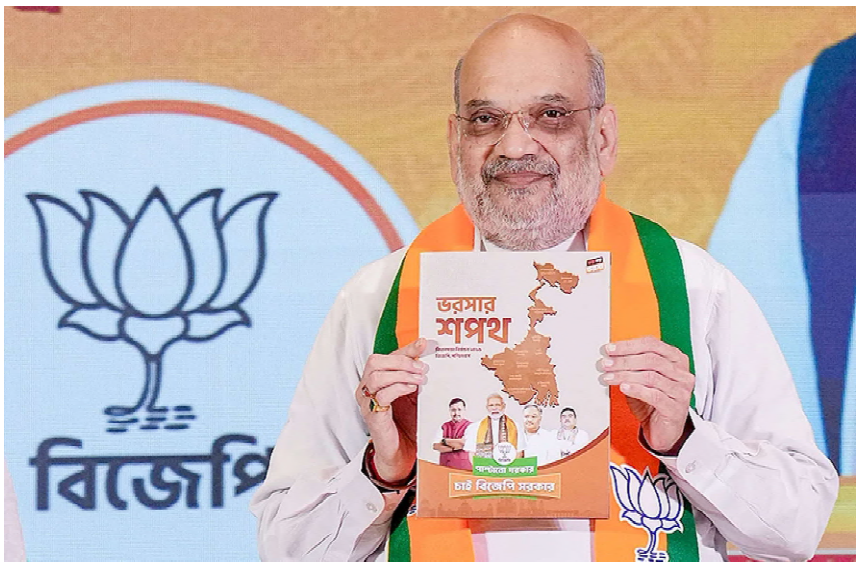

बंगाल विधानसभा चुनाव के ठीक 13 दिन पहले 10 अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने चुनावी वादों का पिटारा खोल दिया। गृह मंत्री अमित शाह ने कोलकाता में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान पार्टी का चुनावी घोषणापत्र जारी किया। इस घोषणापत्र को पार्टी ने भरोसा पत्र नाम दिया गया है। इसमें महिलाओं से लेकर युवाओं तक, प्रमुख वोटर वर्ग के लिए नकदी के वादे किए गए हैं।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बंगाल में 2026 विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा का 'संकल्प पत्र' जारी किया। इस दौरान उन्होंने राज्य में सत्ता परिवर्तन का आह्वान करते हुए 'सोनार बांग्ला' बनाने का वादा किया।

शाह ने कहा कि अगर राज्य में भाजपा की सरकार बनती है तो छह महीने के अंदर समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू की जाएगी। उन्होंने मौजूदा सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि राज्य की जनता तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार और भय की राजनीति से परेशान है।

महिलाओं के लिए किए बड़े वादे

संकल्प पत्र में महिलाओं के लिए कई अहम घोषणाएं की गई हैं। इसके तहत केजी से पीजी तक लड़कियों की शिक्षा मुफ्त करने और सरकारी नौकरियों में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा किया गया है। साथ ही हर महिला के बैंक खाते में हर महीने 3,000 रुपए देने की भी बात कही गई है।

इसके अलावा घोषणा पत्र में टीएमसी सरकार के कथित भ्रष्टाचार पर श्वेत पत्र जारी करने का वादा, सातवें वेतन आयोग को लागू करने, घुसपैठ और गोतस्करी पर रोक लगाने का संकल्प, उत्तर बंगाल में प्रौद्योगिकी संस्थान खोलने का संकल्प है।

यह संकल्प पत्र भरोसे का है : शाह

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि यह संकल्प पत्र भरोसे का है। यह सोनार बांग्ला के निर्माण का भरोसा है। उन्होंने कहा कि इस भरोसे के आधार पर रचनात्मक रूप से चुनाव में जाना चाहते हैं। अमित शाह ने कहा कि मुझे भरोसा है कि बंगाल की जनता हमें पांच साल के लिए सरकार बनाने का मौका जरूर देगी।

कार्यक्रम के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि यह संकल्प पत्र बेरोजगार युवाओं और महिलाओं को एक नया मार्ग दिखाएगा। उन्होंने आगे कहा कि टीएमसी से त्रस्त बंगाल अब परिवर्तन चाहता है। लेफ्ट से परेशान जनता ने ममता दीदी को मैंडेट दिया। उन्होंने तीसरा मैंडेट भी प्राप्त किया, लेकिन जिन आशाओं के साथ जनता ने ममता बनर्जी को जनादेश दिया था, सरकार उन पर खरी नहीं उतरी है।

घुसपैठ को लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति करेंगे लागू

अमित शाह ने कहा कि हमारी सरकार घुसपैठ को लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति पर आगे बढ़ेगी। पश्चिम बंगाल की जनता को भरोसा दिलाना चाहता हूं कि पूर्ण बहुमत की सरकार बनाइए। हम घुसपैठियों को बाहर निकाल देश और बंगाल को सुरक्षित बनाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि बकाया डीए भुगतान सुनिश्चित किया जाएगा और सरकार बनने के 45 दिन के भीतर सातवें वेतन आयोग को लागू किया जाएगा।

अमित शाह ने कहा कि एक से पांच तारीख के भीतर हर महीने भाजपा की सरकार हर माता के खाते में तीन हजार रुपए ट्रांसफर करेगी। आयुष्मान भारत समेत सभी केंद्रीय योजनाएं बंगाल में लागू करेंगे। उन्होंने छह महीने के भीतर समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का वादा किया।

उन्होंने आगे कहा कि बंगाल की सीमाओं को घुसपैठ के लिए सील करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि एक भी गौ माता की तस्करी भारत के बाहर न हो। उन्होंने एक करोड़ स्वरोजगार और रोजगार के अवसर हम सृजित करेंगे। हजारों युवाओं को उद्योग साहसी बनाने का काम करेंगे। अमित शाह ने बेरोजगार युवाओं को तीन हजार रुपये मासिक भत्ता देने का काम भी करेंगे।

सांप पर भी कर सकते हैं भरोसा लेकिन भाजपा पर नहीं : दीदी

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को भाजपा पर तीखा हमला किया। उत्तर 24 परगना जिले के टेंटुलिया में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा को असम के स्थानीय लोगों के वोटों पर भरोसा नहीं था। इसलिए पार्टी ने चुनाव जीतने के लिए बाहर से लोग बुलाए।

ममता ने दावा किया कि उत्तर प्रदेश से 50,000 लोगों को ट्रेन में भरकर असम लाया गया। ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा के राज में देश की कोई भी एजेंसी निष्पक्ष नहीं रह गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि केसरिया पार्टी ने सभी एजेंसियों को खरीद लिया है।

भाजपा पर कड़ा प्रहार करते हुए उन्होंने कहा, %एक सांप पर तो भरोसा किया जा सकता है, लेकिन भाजपा पर कभी नहीं।% पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले टीएमसी और भाजपा के बीच जुबानी जंग काफी तेज हो गई है।

रैली के दौरान मुख्यमंत्री ने वोटर लिस्ट से नाम हटाए जाने का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया के दौरान 90 लाख नाम हटा दिए गए हैं। एक अखबार की रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि इन 90 लाख नामों में से 60 लाख हिंदू और 30 लाख मुस्लिम हैं।

राघव चड्ढा : 'साइलेंट साइडलाइनिंग' का शिकार

जन जन विचार

...✍ सुभाष कुमार चौधरी

भारतीय राजनीति में उभरते चेहरों की कहानियां अक्सर जितनी तेजी से बनती हैं, उतनी ही तेजी से मोड़ भी ले लेती हैं। राघव चड्ढा की राजनीतिक यात्रा भी कुछ ऐसी ही कहानी बनती जा रही है-एक ऐसा चेहरा जो कभी आम आदमी पार्टी की नई पीढ़ी की पहचान था, आज उसी पार्टी में उसकी भूमिका को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

दिल्ली की राजनीति से निकलकर राष्ट्रीय मंच तक पहुंचने वाले राघव चड्ढा ने खुद को केवल एक प्रवक्ता नहीं, बल्कि मुद्दों पर पकड़ रखने वाले नेता के रूप में स्थापित किया। संसद में उनकी आवाज, मीडिया में उनकी मौजूदगी और पंजाब चुनावों में उनकी सक्रियता-इन सबने उन्हें पार्टी का 'युवा चेहरा' बना दिया था। वह उन गिने-चुने नेताओं में थे, जिनकी भाषा में आक्रामकता के साथ-साथ तथ्यों की मजबूती भी दिखती थी।

लेकिन राजनीति में केवल उभरना ही कहानी नहीं होता, टिके रहना असली परीक्षा होती है। और यहीं से राघव चड्ढा की कहानी में एक नया अध्याय शुरू होता है-जहां चमक थोड़ी कम होती दिखती है और सवाल थोड़े ज्यादा।

राघव चड्ढा की राजनीति की सबसे बड़ी ताकत रही है-आम मुद्दों पर उनकी पकड़। शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई, भ्रष्टाचार-उन्होंने इन विषयों को केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें लगातार संसद और सार्वजनिक मंचों पर उठाया। पंजाब में उन्होंने नशे, बेरोजगारी और वित्तीय संकट जैसे मुद्दों को सामने लाने की कोशिश की। यही कारण है कि उनकी अपील केवल पार्टी कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि आम लोगों के बीच भी उनकी एक अलग पहचान बनी।

छोटे दिखने वाले आम लोगों के मुद्दों को बनाया बड़ा

राघव चड्ढा की राजनीति को अगर एक लाइन में समझना हो, तो कहा जा सकता है, 'छोटे दिखने वाले मुद्दों को बड़ा बनाना'। यही वजह है कि एयरपोर्ट के महंगे समोसे से लेकर गिग वर्कर्स तक, उन्होंने हर उस सवाल को उठाया जो सीधे आम आदमी की जेब और जिंदगी से जुड़ा है।

1. एयरपोर्ट महंगाई : एयरपोर्ट पर समोसा, चाय, पानी की ऊंची कीमतों पर सवाल-आम आदमी के लिए एयरपोर्ट क्यों महंगा ? यह मुद्दा सोशल मीडिया पर वायरल हुआ

2. गिग वर्कर्स : स्विगी, जोमैटो, ओला, ऊबर डिलीवरी/ड्राइवर कर्मचारियों के अधिकार, सामाजिक सुरक्षा, बीमा और स्थायी आय की मांग। संसद में नीति बनाने की जरूरत उठाई

3. 28 दिन वाला मोबाइल रिचार्ज : 30-31 दिन के महीने के बजाय 28 दिन का प्लान क्यों ?, साल में 12 की जगह 13 बार रिचार्ज की मजबूरी, डेटा खत्म होने पर अतिरिक्त खर्च (टॉप-अप), उपभोक्ताओं पर 'छिपा आर्थिक बोझ' बताया।

4. शिक्षा : दिल्ली सरकारी स्कूल मॉडल का समर्थन, पूरे देश में शिक्षा सुधार लागू करने की मांग, इंफ्रास्ट्रक्चर और क्वालिटी पर जोर।

5. स्वास्थ्य सेवाएं: सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं की वकालत, मोहल्ला क्लीनिक को प्रभावी मॉडल बताया।

6. महंगाई और टैक्स : पेट्रोल, डीजल, एलपीजी की कीमतों पर सवाल, टैक्स सिस्टम को आम आदमी के अनुकूल बनाने की मांग।

7. बिजली-पानी : मुफ्त/सस्ती बिजली-पानी मॉडल, गरीब और मध्यम वर्ग को राहत देने पर जोर।

8. पंजाब के मुद्दे : नशा समस्या, बेरोजगारी, राज्य का बढ़ता कर्ज, किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था।

9. रोजगार और युवा : नौकरी के अवसरों की कमी, स्किल डेवलपमेंट, स्टार्टअप और युवा समर्थन।

10. भ्रष्टाचार विरोध : पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग, विभिन्न सरकारों पर भ्रष्टाचार के आरोप।

11. संसद और लोकतांत्रिक प्रक्रिया : संसद में कामकाज की गुणवत्ता, सांसदों की जवाबदेही व लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर सवाल।

फिर भी, सवाल यह है कि जब एक नेता इतना सक्रिय और लोकप्रिय हो, तो अचानक उसकी राजनीतिक दृश्यता क्यों कम होने लगती है ?

इसका सीधा जवाब शायद न अरविंद केजरीवाल के पास खुलकर है, न ही राघव चड्ढा के। लेकिन संकेत साफ हैं। पिछले एक-दो वर्षों में दोनों के बीच वह सार्वजनिक नजदीकी कम होती गई, जो कभी इस रिश्ते की पहचान थी। मंचों पर दूरी, फैसलों में सीमित भूमिका और विवादों के दौरान अपेक्षाकृत चुप्पी-ये सब उस बदलाव की ओर इशारा करते हैं, जिसे राजनीतिक भाषा में अक्सर 'साइडलाइनिंग' कहा जाता है।

राजनीति में यह कोई नई बात नहीं है। हर पार्टी के भीतर शक्ति का एक संतुलन होता है, जहां उभरते नेताओं को अपनी जगह बनानी भी होती है और बचानी भी। कई बार यह संतुलन नेतृत्व की प्राथमिकताओं से तय होता है, तो कई बार परिस्थितियां इसे बदल देती हैं। आम आदमी पार्टी के हालिया विवादों और आरोपों के दौर में राघव चड्ढा का अपेक्षाकृत लो-प्रोफाइल रहना भी चर्चा का विषय बना। क्या यह उनकी रणनीति थी या उन्हें पीछे किया गया-यह सवाल अभी भी अनुत्तरित है।

एक और दिलचस्प पहलू यह है कि राघव चड्ढा की राजनीति हमेशा 'मुद्दों की राजनीति' रही है, जबकि पार्टी की रणनीति कई बार 'राजनीतिक टकराव' पर आधारित दिखती है। ऐसे में क्या यह अंतर भी दूरी की वजह बना ? यह सवाल राजनीतिक गलियारों में लगातार गूंज रहा है।

फिर भी, यह कहना जल्दबाजी होगी कि राघव चड्ढा की भूमिका खत्म हो गई है। भारतीय राजनीति में ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां नेता कुछ समय के लिए पीछे जाते हैं और फिर नए रूप में वापसी करते हैं। राघव चड्ढा के पास अभी भी वह पूंजी है-युवा छवि, साफ-सुथरी राजनीति का दावा और मुद्दों पर पकड़-जो उन्हें भविष्य में फिर से केंद्र में ला सकती है।

असल में, यह कहानी केवल एक नेता की नहीं, बल्कि उस राजनीति की भी है, जहां उभार और संतुलन के बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है।

राघव चड्ढा आज भले ही सुर्खियों के केंद्र में कम दिख रहे हों, लेकिन उनकी राजनीतिक यात्रा अभी रुकी नहीं है-वह बस एक ऐसे मोड़ पर है, जहां अगला कदम ही तय करेगा कि यह कहानी ठहर जाएगी या फिर नई रफ्तार पकड़ेगी।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

जस्टिस यशवंत...

सूर्यकांत को भी भेजी है। यह इस्तीफा नौ अप्रैल 2026 की तिथि में भेजा गया है।

इस्तीफा पत्र में यशवंत वर्मा ने लिखी एक-एक बात

न्यायमूर्ति वर्मा ने अपने पत्र में कहा कि इस्तीफा देने के लिए मजबूर किए जाने वाले कारण की वजह से मैं इस संस्था पर बोझ नहीं बने रहना चाहता और गहरी पीड़ा की वजह से इस्तीफा दे रहा हूं।

उन्होंने महाभियोग की कार्यवाही शुरू होने के बाद इस्तीफा दे दिया है। कहा जा रहा है कि अब पार्लियामेंट्री कमिटी की इंक्वारी भी स्वत समाप्त हो जाएगी।

मार्च 2025 में आवास से मिले थे जले हुए नोट

दिल्ली हाई कोर्ट में न्यायमूर्ति रहने के दौरान उनके दिल्ली स्थित आवास में मार्च 2025 में कथित तौर पर नकदी जलने के बाद उनका स्थानांतरण दिल्ली हाई कोर्ट से वापस इलाहाबाद हाईकोर्ट कर दिया गया था। यहां भी उनके स्थानांतरण का जमकर विरोध हुआ था।

इसका परिणाम यह हुआ था उन्हें केसों की सुनवाई से अलग रखा गया था। हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने विरोध किया था। फिलहाल आरोपों के संबंध में एक आंतरिक जांच लंबित बताई जाती है। इस मामले के सामने आने के बाद ही न्यायमूर्ति को इस्तीफा देने की सलाह दी गई थी।

महाभियोग के माध्यम से हटाए जाने पर सभी सुविधाओं से वंचित होना पड़ता। अब पूर्व न्यायमूर्ति को मिलने वाली सुविधाएं पेंशन अनुमन्य होंगी। वकालत भी कर सकेंगे।

रिकॉर्ड 85.13 फीसदी...

पीछे छोड़ दिया, जहां कई सीटों पर 90 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ। दलगांव (94.57प्रतिशत), जलेश्वर, सृजनग्राम, मानकाचर और गोलकगंज जैसे क्षेत्रों में जबरदस्त भागीदारी ने साफ कर दिया कि गांव इस चुनाव की असली ताकत बनकर उभरे हैं। वहीं गुवाहाटी जैसे शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम मतदान दर्ज हुआ। मतदान केंद्रों पर लंबी कतारें, सेल्फी प्वाइंट और बुजुर्गों के लिए विशेष सुविधाओं ने चुनाव को एक उत्सव का रूप दे दिया। हालांकि कुछ जगहों पर ईवीएम खराबी और हल्की झड़पों की खबरें भी सामने आईं। असम में महिला मतदाताओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। महिलाओं का झुकाव कई सीटों पर परिणाम तय कर सकता है।

नाटो में दरार : ट्रंप के रुख से वैश्विक सुरक्षा ढांचे पर संकट

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

दुनिया की सबसे मजबूत मानी जाने वाली सैन्य गठबंधन व्यवस्था नॉर्थ एटलांटिक ट्रिटी ऑर्गेनाइजेशन (नाटो) इस समय गहरे संकट के दौर से गुजर रही है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हालिया बयानों ने इस गठबंधन की एकजुटता और भविष्य दोनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। ट्रंप द्वारा नाटो से दूरी बनाने के संकेत ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में हलचल तेज कर दी है।

पिछले कुछ वर्षों से ट्रंप लगातार यूरोपीय देशों पर रक्षा खर्च बढ़ाने का दबाव बनाते रहे हैं। उनका मानना रहा है कि अमेरिका नाटो का अत्यधिक बोझ उठा रहा है, जबकि अन्य सदस्य देश अपेक्षित योगदान नहीं दे रहे। हालिया घटनाक्रम, विशेषकर पश्चिम एशिया में तनाव और सैन्य सहयोग को लेकर मतभेद, ने इस असंतोष को खुलकर सामने ला दिया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, यदि अमेरिका नाटो से अलग होता है या अपनी भूमिका सीमित करता है, तो इसका सीधा असर यूरोप की सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ेगा। दशकों से अमेरिकी सैन्य शक्ति पर निर्भर यूरोपीय देशों को अचानक अपनी सुरक्षा नीति पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है। इससे न केवल सैन्य संतुलन बदलेगा, बल्कि वैश्विक शक्ति संरचना भी प्रभावित होगी।

रणनीतिक दृष्टि से यह स्थिति रूस और चीन जैसे देशों के लिए अवसर लेकर आ सकती है। अमेरिका की संभावित दूरी यूरोप को कमजोर कर सकती है, जिससे ये देश अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने की कोशिश करेंगे।

इसी बीच, अमेरिका द्वारा जर्मनी और स्पेन जैसे देशों में स्थित सैन्य अड्डों को कम करने या हटाने की चर्चा ने भी चिंता बढ़ा दी है। इसे केवल सैन्य पुनर्संतुलन नहीं, बल्कि सहयोगियों पर दबाव बनाने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है।

ऊर्जा सुरक्षा का मुद्दा भी इस पूरे घटनाक्रम में अहम भूमिका निभा रहा है। स्ट्रैट ऑफ हर्मुज में बढ़ते तनाव और तेल आपूर्ति पर उसके प्रभाव ने वैश्विक राजनीति को और जटिल बना दिया है। ट्रंप का यह बयान कि ऊर्जा पर निर्भर देशों को अपनी सुरक्षा खुद सुनिश्चित करनी चाहिए, यूरोप और एशिया दोनों के लिए स्पष्ट संदेश माना जा रहा है।

नाटो नेतृत्व और अमेरिका के बीच बातचीत जारी है, लेकिन अंदरूनी मतभेद अब छिपे नहीं हैं। नाटो महासचिव मार्क रुटे ने भी माना है कि स्थिति चुनौतीपूर्ण है और सदस्य देशों के बीच विश्वास में कमी आई है।

इतिहास में 9/?11 के बाद नाटो ने अभूतपूर्व एकजुटता दिखाई थी, लेकिन वर्तमान हालात इसके विपरीत हैं। अमेरिका अब खुद को अलग-थलग महसूस कर रहा है, जिससे गठबंधन की बुनियाद कमजोर पड़ती दिख रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह रुझान जारी रहा, तो दुनिया एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ सकती है, जहां क्षेत्रीय शक्तियां और नए सुरक्षा गठबंधन उभरेंगे। यूरोप को अपनी स्वतंत्र सैन्य रणनीति विकसित करनी पड़ सकती है, जबकि एशिया में भी नए समीकरण बन सकते हैं।

नाटो का यह संकट केवल एक सैन्य गठबंधन का संकट नहीं, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था का संकेत है जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित हुई थी। आने वाले समय में यह तय करेगा कि दुनिया सहयोग की दिशा में आगे बढ़ेगी या प्रतिस्पर्धा और टकराव की ओर।

1000 रुपए से ज्यादा का नहीं मिलेगा तेल

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

अगर आप गाड़ी में पेट्रोल-डीजल भरवाने जा रहे हैं तो प्राइस के साथ-साथ फ्यूल लिमिट के बारे में भी जान लें। दरअसल, एक भारतीय तेल कंपनी ने ईंधन की खरीदी पर लिमिट लागू कर दी है। ऐसे में कोई भी व्यक्ति एक बार में 1000 रुपए से ज्यादा का तेल नहीं खरीद पाएगा। दरअसल, ईरान युद्ध के कारण आपूर्ति बाधित होने और अस्थायी युद्धविराम के बावजूद स्थिति नियंत्रण में रहने के मद्देनजर, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने अपने सभी पेट्रोल पंपों पर ईंधन की खरीद सीमित कर दी है।

ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, इस मामले से परिचित सूत्रों ने बताया कि देश की सबसे बड़ी प्राइवेट सेक्टर की ऑयल रिफाइनरी कंपनी ने अपने साझेदार बीपी पीएलसी के साथ संचालित ईंधन स्टेशनों पर प्रति व्यक्ति ईंधन की खरीद को ?1,000 तक सीमित कर दिया है। कंपनी के देशभर में 2,000 से अधिक पेट्रोल पंप हैं।

जियो-बीपी पेट्रोल पंपों के संचालकों ने घबराहट में खरीदारी को रोकने और मांग में अचानक वृद्धि के कारण अपने स्टेशनों को खाली होने से बचाने के लिए सीमा लागू करना शुरू कर दिया है। सूत्रों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर यह जानकारी दी क्योंकि यह सार्वजनिक नहीं है। वहीं, कंपनी ने इस बारे में कोई औपचारिक निर्देश जारी नहीं किया है।

उधर, रिलायंस इंडस्ट्रीज के एक प्रवक्ता ने कहा कि ऐसा कोई निर्देश नहीं है जो ग्राहकों द्वारा खरीदे जा सकने वाले ईंधन की मात्रा को प्रतिबंधित करता हो, हालांकि, उन्होंने यह स्वीकार किया कि ऐसे मामले किसी 卐स्थानीय卐 हालात के सामने आ सकते हैं।

जन जब की बात जब जब तक साप्ताहिक
जन जन विचार
RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

Head Office : Golapi Market, 1st Floor, Boltola, Guwahati 781029
Branch Office : JanJan Vichar, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati - 781005
Contact : 69001 26012
Email: official.janjanvichar@gmail.com
Website: WWW.janjanvichar.in

ग्राहक सदस्यता फॉर्म

ग्राहक विवरण

पूरा नाम : .....
पूरा पता : .....
.....
मोबाइल : ..... ह्वाट्सएप .....
ई-मेल (यदि हो) : .....

सदस्यता विवरण
अवधि : 1 वर्ष शुल्क : रु. 500/ मात्र

सदस्यता के साथ विज्ञापन लाभ
- सालभर (52 अंक) का अखबार निःशुल्क मिलेगा
- एक निःशुल्क विज्ञापन (10 रोगी. x3 कॉलम)
- विज्ञापन प्रकाशन की तिथि ग्राहक की सुविधा अनुसार

भुगतान विवरण
☐ यूपीआई ☐ बैंक ट्रांसफर
Bank Details
JAN JAN VICHAR
Bank : HDFC, Branch : Guwahati
A/C No. 50200116979015
IFSC : HDFC0000264
इस क्यूआर कोड को स्कैन कर जन जन विचार के बैंक खाते में सीधे भुगतान कर सकते हैं।
(कृपया उपरोक्त में किसी एक माध्यम से ही भुगतान करें।)
भुगतान तिथि : ..... रसीद संख्या:.....

घोषणा

मैं स्वेच्छा से जन जन विचार साप्ताहिक अखबार की एक वर्ष की सदस्यता ग्रहण करता/करती हूँ एवं सभी शर्तों से सहमत हूँ।

ग्राहक के हस्ताक्षर : तिथि :

कार्यालय उपयोग हेतु

सदस्यता क्रमांक: ..... भुगतान प्राप्त रसीद संख्या:..... प्राप्तकर्ता का नाम : .....
तिथि : ..... हस्ताक्षर : .....

नौवीं से छात्रों को एडवांस मैथ और साइंस का विकल्प

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) ने कक्षा 9 और 10 के छात्रों के लिए एक बड़ा शैक्षणिक बदलाव प्रस्तावित किया है। अब छात्रों को मैथ्स और साइंस दो स्तरों-कॉमन (स्टैंडर्ड) और एडवांस्ड-में पढ़ने का विकल्प मिलेगा। यह बदलाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के तहत किया जा रहा है।सीबीएसई ने करिकुलम को आधुनिक बनाने के लिए कई नए विषय जोड़े हैं- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), कम्प्यूटेशनल थिंकिंग (CT), वोकेशनल एजुकेशन, आर्ट और फिजिकल एजुकेशन। एआई और सीटी को 2029 से बोर्ड परीक्षा में अनिवार्य किया जा सकता है। सीबीएसई के अनुसार, यह बदलाव छात्रों को करियर-रेडी और मल्टी-स्किल्ड बनाने की दिशा में बड़ा कदम है।

सीबीएसई का बड़ा बदलाव

नया नियम : कक्षा 9 से ही छात्रों को दो स्तर चुनने का विकल्प

कॉमन लेवल (अनिवार्य): सभी छात्रों के लिए

एडवांस्ड लेवल (वैकल्पिक) : इच्छुक छात्रों के लिए। छात्र चाहें तो सिर्फ एक विषय (मैथ या साइंस) में भी एडवांस्ड ले सकते हैं।

परीक्षा पैटर्न में बदलाव

कॉमन परीक्षा : 80 अंक, समय- 3 घंटे

एडवांस्ड परीक्षा : 25 अंक, समय - 1 घंटा (हायर ऑर्डर थिंकिंग स्किल्स आधारित प्रश्न)। एडवांस्ड का स्कोर अलग से मार्कशीट में दिखेगा, लेकिन कुल अंकों में नहीं जुड़ेगा।

कक्षा 10 में एडवांस्ड परीक्षा 2028 से शुरू होगी

50 प्रतिशत या उससे अधिक अंक लाने पर 'क्वालीफाइड' लिखा जाएगा। कम अंक होने पर मार्कशीट में कोई उल्लेख नहीं- यानी कोई नुकसान नहीं।

फायदे : छात्रों को अपनी क्षमता परखने का मौका, प्रतियोगी परीक्षाओं की बेहतर तैयारी।

चिंताएं : अभिभावकों का दबाव बढ़ सकता है, स्कूलों को अतिरिक्त तैयारी करनी होगी।

सीबीएसई का यह नया मॉडल पारंपरिक शिक्षा से आगे बढ़कर लचीली और स्किल-आधारित शिक्षा प्रणाली की ओर संकेत करता है। अब छात्र सिर्फ पढ़ाई नहीं करेंगे, बल्कि अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार आगे बढ़ने का रास्ता खुद चुन सकेंगे।

अंग्रेजी अब अनिवार्य नहीं दो भारतीय भाषाएं जरूरी

सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (सीबीएसई) ने शिक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव करते हुए कक्षा 6 से तीन भाषा को अनिवार्य करने का फैसला लिया है। इस नए नियम के तहत अब छात्रों को दो भारतीय भाषाएं और एक विदेशी भाषा पढ़नी होगी।

इस बदलाव ने सबसे ज्यादा चर्चा इसलिए बटोरी है क्योंकि अब अंग्रेजी अनिवार्य नहीं रहेगी, बल्कि उसे विदेशी भाषा के विकल्प में रखा गया है।

नया 3-लैंग्वेज फॉर्मूला : सीबीएसई ने भाषा प्रणाली को तीन हिस्सों में बांटा है- R1 (प्राथमिक भाषा), R2 (दूसरी भाषा) और R3 (तीसरी भाषा)।

नियम के अनुसार, तीन में से कम से कम 2 भाषाएं भारतीय होना जरूरी है। तीसरी भाषा विदेशी भाषा (जिसमें अंग्रेजी भी शामिल) होगी।

उद्देश्य : इस नीति का मुख्य उद्देश्य है कि छात्र अपनी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं से जुड़े रहें, भारतीय भाषाओं को बढ़ावा मिले और सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत किया जा सके।

अंग्रेजी अब विकल्प, मजबूरी नहीं : अंग्रेजी को अब विदेशी भाषा के रूप में रखा गया है। छात्र चाहें तो अंग्रेजी लें, चाहें तो फ्रेंच, जर्मन आदि। अंग्रेजी के साथ दूसरी विदेशी भाषा नहीं ले सकते।

यानी अब अंग्रेजी पढ़ना जरूरी नहीं, बल्कि एक विकल्प होगा।

कब से लागू होगा : यह नियम 2026-27 सत्र से कक्षा 6 में लागू होगा। 2031 तक कक्षा 10 में पूरी तरह लागू हो जाएगा

भारत के राज्य और राजधानियों के नाम की सूची

भारत में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक प्रशासक के माध्यम से किया जाता है। राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की राजधानियों के नाम

क्रम सं.	राज्य	राजधानियां
1	आंध्र प्रदेश	अमरावती
2	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर
3	असम	दिसपुर
4	बिहार	पटना
5	छत्तीसगढ़	रायपुर
6	गोवा	पणजी
7	गुजरात	गांधीनगर
8	हरियाणा	चंडीगढ़
9	हिमाचल प्रदेश	शिमला
10	झारखंड	रांची
11	कर्नाटक	बेंगलुरु
12	केरल	तिरुवनंतपुरम
13	मध्य प्रदेश	भोपाल
14	महाराष्ट्र	मुंबई
15	मणिपुर	इंफाल
16	मेघालय	शिलांग
17	मिजोरम	आइजोल
18	नगालैंड	कोहिमा
19	ओडिशा	भुवनेश्वर
20	पंजाब	चंडीगढ़
21	राजस्थान	जयपुर
22	सिक्किम	गंगटोक
23	तमिलनाडु	चेन्नई
24	तेलंगाना	हैदराबाद
25	त्रिपुरा	अगरतला
26	उत्तराखंड	देहरादून
27	उत्तर प्रदेश	लखनऊ
28	पश्चिम बंगाल	कोलकाता

भारत के केंद्र शासित प्रदेश और राजधानी

क्रम सं.	केंद्र शासित प्रदेश	राजधानी
1	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	श्री विजय पुरम
2	चंडीगढ़	चंडीगढ़
3	दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव	दमन
4	एनसीटी दिल्ली सरकार	दिल्ली
5	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर, जम्मू
6	लद्दाख	लेह
7	लक्षद्वीप	कवरत्ती
8	पुडुचेरी	पुडुचेरी

सीआरपीएफ में 9195 पदों पर भर्ती

10वीं पास युवाओं के लिए सुनहरा मौका, 20 अप्रैल से आवेदन शुरू

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

रोजी-रोजगार

देश के लाखों युवाओं के लिए बड़ी खबर है। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने कांस्टेबल (टेक्निकल एवं ट्रेड्समैन और पायनियर) के 9,195 पदों पर भर्ती का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। इस भर्ती के लिए 10वीं पास उम्मीदवार आवेदन कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण तिथियां-

आवेदन शुरू : 20 अप्रैल

अंतिम तिथि : 19 मई

आवेदन माध्यम-

वेबसाइट rect.crpf.gov.in

कुल पदों का विवरण-

कांस्टेबल (टेक्निकल × ट्रेड्समैन) : 9,175 पद (पुरुष- 9,096, महिला-79), पायनियर विंग : 20 पद (केवल पुरुष), मेसन: 13, इलेक्ट्रीशियन : 7

वेतनमान-

पे लेवल-3 के तहत रु. 21,700 से रु 69,100 प्रति माह

योग्यता-

न्यूनतम:10वीं पास, **ड्राइवर:** एचटीवी लाइसेंस अनिवार्य, **एमएमवी :** आईटीआई/अप्रेंटिस + अनुभव, **अन्य ट्रेड्स :** संबंधित कार्य में दक्षता

आयु सीमा-

ड्राइवर : 21-27 वर्ष

अन्य पद : 18-23 वर्ष

आरक्षण के अनुसार छूट-

एससी/एसटी: 5 वर्ष,

ओबीसी : 3 वर्ष

चयन प्रक्रिया-

शारीरिक दक्षता परीक्षा (पीईटी), शारीरिक मानक परीक्षण (पीएसटी), कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी), ट्रेड टेस्ट, दस्तावेज सत्यापन व मेडिकल जांच।

परीक्षा पैटर्न (सीबीटी)-

कुल प्रश्न : 100 (100 अंक), **समय :** 2 घंटे, **विषय :** रीजनिंग-25, सामान्य ज्ञान-25, गणित - 25, हिंदी/अंग्रेजी - 25, नेगेटिव मार्किंग- 0.25 अंक

फिजिकल टेस्ट (पीईटी)-

पुरुष : 5 किमी दौड़ (24 मिनट), महिला : 1.6 किमी (8.30-12 मिनट, पद अनुसार)

आवेदन शुल्क-

सामान्य/ ओबीसी/ईडब्ल्यूएस (पुरुष)- रु100, एससी/एसटी/ महिला/ईएसएम : नि:शुल्क।

एनआईए में असिस्टेंट समेत 29 पदों पर भर्ती

देश की प्रमुख जांच एजेंसी नेशनल इंवेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) में नौकरी पाने का शानदार अवसर सामने आया है। एजेंसी ने असिस्टेंट सहित कुल 29 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं।

कुल पदों का विवरण : इस भर्ती अभियान के तहत विभिन्न पदों पर वैकेंसी निकाली गई है- सेक्शन ऑफिसर/ऑफिस सुपरिटेंडेंट : 3 पद, असिस्टेंट : 3 पद, स्टेनोग्राफर ग्रेड-I : 14 पद, अपर डिवीजन क्लर्क : 3 पद, लोअर डिवीजन क्लर्क : 6 पद।

महत्वपूर्ण तिथि : आवेदन की अंतिम तिथि- 18 मई 2026, आवेदन प्रक्रिया : ऑफलाइन माध्यम।

इच्छुक उम्मीदवारों को समय सीमा के भीतर आवेदन पत्र जमा करना होगा।

योग्यता : मान्यता प्राप्त संस्थान से 12वीं / ग्रेजुएशन (पद अनुसार), संबंधित स्किल और अनुभव आवश्यक। **आयु सीमा :** अधिकतम आयु- 56 वर्ष

वेतनमान : रु. 19,900 से रु. 1,42,400 प्रति माह, साथ में अन्य सरकारी भत्ते और सुविधाएं।

विराट होता सूर्यवंशी का वैभव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

बुमराह को बेदम करके छा गया 'बिहार का लाल'

क्रिकेट के मैदान पर उम्र नहीं, हौसला और हुनर मायने रखता है-यह बात 7 अप्रैल की रात गुवाहाटी में खेले गए मुकाबले में साफ हो गई। राजस्थान रॉयल्स और मुंबई इंडियंस के बीच खेले गए मुकाबले में एक तरफ दुनिया का सबसे बड़ा गेंदबाज था तो दूसरी तरफ 15 वर्षीय बल्लेबाज। इस मैच को जसप्रीत बुमराह बनाम वैभव सूर्यवंशी के रूप में प्रस्तुत किया गया।

सभी के मन में यह सवाल था कि कैसे एक बच्चा दुनिया के सबसे घातक गेंदबाज का सामना करेगा, लेकिन वैभव ने बुमराह की गेंदों पर दो अविश्वसनीय छक्के लगाकर बता दिया कि ये बल्लेबाज बेहद खास है।

मैच से पहले सभी की नजरें इस टक्कर पर थीं-एक तरफ अनुभवी और घातक बुमराह, दूसरी ओर किशोर बल्लेबाज सूर्यवंशी। लेकिन जो हुआ, उसने इस मुकाबले को खास बना दिया। सूर्यवंशी ने बुमराह की पहली ही गेंद पर लॉन्ग ऑन के ऊपर छक्का जड़कर अपने इरादे जाहिर कर दिए। इसके बाद कुछ ही गेंदों में एक और छक्का लगाकर उन्होंने यह साबित कर दिया कि यह कोई संयोग नहीं, बल्कि असाधारण प्रतिभा है।

बारिश से प्रभावित यह मुकाबला 11-11 ओवर का रहा, लेकिन असर 50 ओवर के मैच जितना बड़ा था। राजस्थान ने आक्रामक शुरुआत की, जिसमें यशस्वी जायसवाल ने 77 रन की शानदार पारी खेली, वहीं सूर्यवंशी ने 31 रनों की विस्फोटक पारी खेलकर मैच की दिशा तय कर दी। सिर्फ बुमराह ही नहीं, बल्कि ट्रेंट बोल्ट और अन्य गेंदबाज भी सूर्यवंशी के आक्रमण से बच नहीं सके। उनकी बल्लेबाजी में आत्मविश्वास और आक्रामकता साफ दिखी। ऐसा लगा मानो अनुभव और प्रतिष्ठा का अंतर पूरी तरह खत्म हो गया हो। महज 15 साल की उम्र में सूर्यवंशी पहले ही आईपीएल में सबसे तेज अर्धशतक (15 गेंदों में) जड़ चुके हैं। यह प्रदर्शन बताता है कि वह केवल भविष्य की उम्मीद नहीं, बल्कि वर्तमान की सच्चाई बन चुके हैं।

मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने भी माना कि मैच में शुरुआती ओवरों में ही अंतर साफ हो गया था। राजस्थान की यह जीत पूरी तरह से दबदबे वाली रही, जिसमें जायसवाल की समझदारी और सूर्यवंशी की निडरता का बेहतरीन मेल देखने को मिला। सूर्यवंशी की यह पारी केवल एक प्रदर्शन नहीं, बल्कि एक संकेत है- भारतीय क्रिकेट में नई पीढ़ी तैयार है, जो बड़े नामों से डरती नहीं, बल्कि उन्हें चुनौती देती है। गुवाहाटी की यह रात लंबे समय तक याद रखी जाएगी, जब एक 15 साल के खिलाड़ी ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज को अपनी बल्लेबाजी से 'क्लास' सिखाई।

अर्जेंटीना दौरे के लिए भारतीय महिला हॉकी टीम घोषित

नई दिल्ली। आगामी अर्जेंटीना दौरे के लिए 24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा कर दी गई है। टीम की कमान सलीमा टेटे के हाथों में होगी, जबकि इस दौरे में अनुभवी खिलाड़ियों की वापसी से टीम और मजबूत नजर आ रही है।

इस टीम की सबसे बड़ी खासियत है ड्रैग-फ्लिक विशेषज्ञ दीपिका और अनुभवी गोलकीपर सविता पुनिया की वापसी। दीपिका की वापसी से पेनल्टी कॉर्नर में टीम को बड़ी मजबूती मिलेगी, जबकि सविता की मौजूदगी रक्षापंक्ति को स्थिरता और अनुभव देगी।

भारतीय टीम 13 से 17 अप्रैल के बीच ब्यूनस आयर्स में अर्जेंटीना के खिलाफ चार मैचों की सीरीज खेलेगी। यह दौरा आगामी विश्व कप और एशियाई खेलों की तैयारियों के लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है।

टीम- **गोलकीपर :**सविता, बिछू देवी खारिबाम, **डिफेंडर :** निक्की प्रधान, सुशीला चानू, ज्योति, उदिता समेत अन्य, **मिडफील्ड :** सलीमा टेटे, नेहा, वैष्णवी फाल्के, रुतुजा पिसल **फॉरवर्ड :** नवनीत कौर, दीपिका, मुमताज खान, लालरेम्सियामी।

ताजपुर से आईपीएल तक : बेटे ने पूरा किया पिता का सपना

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

यह सिर्फ एक क्रिकेटर की कहानी नहीं है, यह एक पिता के अधूरे सपने, संघर्ष और एक छोटे से गांव की बदलती पहचान की कहानी है। वैभव सूर्यवंशी आज जिस मुकाम पर हैं, वहां तक पहुंचने के पीछे सिर्फ प्रतिभा नहीं, बल्कि वर्षों का त्याग, मेहनत और अटूट विश्वास छिपा है।

बिहार के समस्तीपुर जिले का ताजपुर-जहां जिंदगी की रफ्तार धीमी है, जहां सपने अक्सर हालातों में दब जाते हैं, वहीं से निकला यह लड़का आज पूरे देश की चर्चा बन चुका है। आज ताजपुर की पहचान सिर्फ एक कस्बे की नहीं, बल्कि 'वैभव सूर्यवंशी के गांव' के रूप में होने लगी है। गलियों में खेलते बच्चे अब बल्ला उठाकर उसी रास्ते पर चलने का सपना देख रहे हैं।

वैभव की कहानी उनके पिता संजीव सूर्यवंशी के बिना अधूरी है। संजीव खुद क्रिकेटर बनना चाहते थे, लेकिन उस दौर में बिहार को क्रिकेट की मुख्यधारा में जगह नहीं मिलने के कारण उनका सपना अधूरा रह गया।

जीवन चलाने के लिए उन्होंने मुंबई में शिपिंग यार्ड में काम किया, पोर्ट पर मजदूरी की, यहां तक कि नाइट क्लब में बाउंसर तक बने। लेकिन क्रिकेट के प्रति उनका जुनून कभी खत्म नहीं हुआ। वही अधूरा सपना उन्होंने अपने बेटे की आंखों में देखा और उसे पूरा करने का संकल्प लिया।

संजीव अपने युवावस्था में हर साल 100 किलोमीटर साइकिल चलाकर पटना जाते थे, सिर्फ एक टूर्नामेंट का फॉर्म लेने के लिए। यह सिर्फ दूरी नहीं थी, यह जुनून का पैमाना था-जो बाद में उनके बेटे के जीवन का आधार बना।

वैभव को उनके चौथे जन्मदिन पर पहला बल्ला मिला। तभी से यह साफ हो गया था कि यह बच्चा कुछ अलग है। 2018 के आसपास उनकी प्रतिभा खुलकर सामने आने लगी, और यहीं से शुरू हुआ असली संघर्ष। संजीव ने एक पुरानी गाड़ी खरीदी और ताजपुर से पटना के बीच लगभग 200 किलोमीटर का सफर तय करना शुरू किया। कोच मनीष कुमार ओझा के अनुसार, 'इतना समर्पण बहुत कम देखने को मिलता है-पिता और बेटे दोनों ने कभी हार नहीं मानी।'

जहां सामान्य खिलाड़ी 200-250 गेंदों की प्रैक्टिस करते हैं, वहीं वैभव रोज 600 गेंदें खेलते थे। सबसे खास बात-उन्हें डिफेंस नहीं, बल्कि अटैक करना सिखाया गया। हर गेंद पर नया शॉट, नया आत्मविश्वास- यही उनकी पहचान बन गया।

समस्तीपुर के एक साधारण मैदान से शुरू हुई यह यात्रा आज आईपीएल के बड़े मंच तक पहुंच चुकी है। उनके पहले कोच बताते हैं कि 9 साल की उम्र में भी उनका खेल 14-15 साल के खिलाड़ी जैसा था। आज उसी मैदान में छोटे-छोटे बच्चे उन्हें देखकर प्रेरित हो रहे हैं।

हाल ही में जब वैभव ने जसप्रीत बुमराह जैसे दिग्गज गेंदबाज के खिलाफ छक्के लगाए, तो यह सिर्फ एक शॉट नहीं था, यह उस सफर का प्रतीक था, जो ताजपुर की गलियों से शुरू होकर दुनिया के सबसे बड़े मंच तक पहुंचा।

रंगाली बिहू : असमिया अस्मिता का उत्सव

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

नए साल, नई फसल और नई उम्मीदों के साथ सजेगा असम

असम की सांस्कृतिक धड़कन कहे जाने वाले रंगाली बिहू (बोहाग बिहू) का आगाज 14 अप्रैल से हो रहा है। यह सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि असम की आत्मा, परंपरा और प्रकृति से जुड़ा एक जीवंत उत्सव है, जो हर साल नई ऊर्जा और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

रंगाली बिहू असमिया नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। यह वह समय होता है जब–

- खेतों में नई फसल की तैयारी शुरू होती है
- प्रकृति नवजीवन से भर उठती है
- समाज में नई उम्मीदों का संचार होता है

यह त्योहार 14 अप्रैल से शुरू होकर लगभग एक सप्ताह तक चलता है, जिसमें हर दिन की अपनी विशेष परंपराएं और महत्व होते हैं।

सात बिहू : परंपरा, प्रकृति और रिश्तों का सात रंगों वाला उत्सव

असम का सबसे बड़ा और जीवंत पर्व रंगाली बिहू केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि 'सात बिहू' के रूप में सात दिनों तक चलने वाली सांस्कृतिक यात्रा है। इन सात दिनों में असमिया जीवन के हर पहलू–प्रकृति, पशु, परिवार, समाज और परंपरा–का सुंदर संगम देखने को मिलता है।

सात बिहू यानी रंगाली बिहू के सात अलग–अलग दिन, जिनमें हर दिन का अपना विशेष नाम और महत्व है। यह केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन जीने की परंपरा है।

1. गोरु बिहू : प्रकृति और पशुओं के प्रति कृतज्ञता

इस दिन गाय–बैलों को नहलाया जाता है, हल्दी और औषधीय पदार्थों से उनका शुद्धिकरण किया जाता है। कृषि जीवन में उनकी भूमिका को सम्मान देते हुए उनकी सेहत और शक्ति की कामना की जाती है।

2. मानुह बिहू : रिश्तों में प्रेम और सम्मान

नववर्ष के पहले दिन लोग स्नान कर नए वस्त्र पहनते हैं और बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। 'गामोसा' और उपहारों का आदान–प्रदान रिश्तों को और मजबूत बनाता है।

3. गोसाई/कुटुम बिहू : आस्था और सामाजिक मेल–जोल

इस दिन धार्मिक स्थलों पर पूजा–अर्चना और नाम–प्रसंग होते हैं। साथ ही, रिश्तेदारों के घर जाकर आपसी स्नेह और जुड़ाव को बढ़ाया जाता है।

4. तांत बिहू : कला और परंपरा का सम्मान

असम की बुनाई कला (तांत) को समर्पित यह दिन शिल्पकारों और बुनकरों के योगदान को सम्मान देता है। यह असमिया पहचान का अहम हिस्सा है।

5. नांगल बिहू : कृषि संस्कृति का उत्सव

खेती में उपयोग होने वाले हल और अन्य औजारों की पूजा की जाती है। यह दिन कृषि के प्रति सम्मान और समर्पण का प्रतीक है।

6. जियरी/चेनही बिहू : बेटियों और स्नेह का पर्व

इस दिन विवाहित बेटियां मायके आती हैं। यह दिन पारिवारिक रिश्तों, खासकर बेटियों के प्रति प्रेम और स्नेह को दर्शाता है।

7. चेरा बिहू : समापन और परंपरा का संदेश

अंतिम दिन दही–चावल (पांइता भात) खाने की परंपरा है। लोकगीतों और परंपराओं के साथ यह उत्सव को विदाई देने का दिन होता है।

'रंग' यानी आनंद : नाम में ही छिपी है भावना

'रंगाली' शब्द असमिया शब्द 'रंग' से बना है, जिसका अर्थ है खुशी और उत्सव। यही वजह है कि यह बिहू सबसे ज्यादा रंगीन और जीवंत माना जाता है।

- ढोल, पेपा और गोगोना की धुन
- युवाओं का पारंपरिक बिहू नृत्य
- गीतों में प्रेम, प्रकृति और जीवन की झलक

हर गांव, हर शहर इस दौरान उत्सव के रंग में डूब जाता है।

कृषि और प्रकृति से गहरा जुड़ाव

रंगाली बिहू मूल रूप से एक कृषि पर्व है। किसान इस समय–

- नई फसल के लिए प्रकृति का आभार व्यक्त करते हैं
- पशुधन की पूजा करते हैं
- अच्छे मौसम और समृद्धि की कामना करते हैं

यह त्योहार हमें प्रकृति और मानव के गहरे रिश्ते की याद दिलाता है।

आधुनिकता के साथ परंपरा का संगम

आज के दौर में रंगाली बिहू ने नया रूप भी लिया है। शहरों में बड़े–बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बिहू प्रतियोगिताएं और लाइव कॉन्सर्ट भी इसे भव्य बना रहे हैं। सोशल मीडिया पर वैश्विक स्तर पर उत्सव की झलक नजर आती है। फिर भी इसकी जड़ें आज भी गांवों और परंपराओं में मजबूती से जुड़ी हुई हैं। जब ढोल की थाप गूंजती है और खेतों में नई उम्मीदें जन्म लेती हैं, तब असम सच में 'रंग' में रंग जाता है।

बिहू गीत

ओइ जान ओइ आकाश खन धुनिया
ओइ जान ओइ तरारे जिलिका
ओइ जान ओइ आकाश खन धुनिया
ओइ जान ओइ तरारे जिलिका
ओइ जान ओइ मनरे सरगत
ओइ जान ओइ तुमि मुर मेनका
ओइ जान ओइ मनरे सरगत
ओइ जान ओइ तुमि मुर मेनका
ओइ जान दूरणिते, ओइ जान तुमि थाका
ओइ जान सपोनोत होय, ओइ जान आमार देखा
ओइ जान आहिल बरदॉइचिला
ओइ जान ओइ दिले बिहुर बतरा
ओइ जान आहिल बरदॉइचिला
ओइ जान ओइ दिले बिहुर बतरा
ओइ जान ओइ जाके जाके बिहुवा
ओइ जान ओइ रंगत होइ बोलिया
ओइ जान तुमि आहिबा
ओइ जान कपौफुल आनिबा
ओइ जान मुर ढिला खोपात
ओइ जान तुमि गुजी दिबा
ओइ जान ओइ सागरत किमान पानी
ओइ जान ओइ कोनेनो जुखिब
ओइ जान ओइ सागरत किमान पानी
ओइ जान ओइ कोनेनो जुखिब
ओइ जान ओइ तोमालोई थका मरम
ओइ जान ओइ कोनेनो बुझिब
ओइ जान ओइ तोमालोई थका मरम
ओइ जान ओइ कोनेनो बुझिब
ओइ जान आने जानो दिब
ओइ जान तोमार अंतरेक
ओइ जान कोने बुझि पाब
ओइ जान तोमार मरमक
ओइ जान ओइ सुनाने दोभाग राति
ओइ जान केतेकीर बिननि
ओइ जान ओइ मनरे चितनि
ओइ जान ओइ निशा नाहे टोपनि
ओइ जान मरुभूमिर बालित
ओइ जान मरीचिका खेदि
ओइ जान तोमाके पाबोलोई
ओइ जान आसों आशा करी
ओइ जान ओइ आकाश खन धुनिया
ओइ जान ओइ तरारे जिलिका
ओइ जान ओइ मनरे सरगत
ओइ जान ओइ तुमि मुर मेनका
ओइ जान दूरणिते, ओइ जान तुमि थाका
ओइ जान सपोनोत होय, ओइ जान आमार देखा
ओइ जान ओइ
ओइ जान ओइ
ओइ जान ओइ

भावार्थ

यह बिहू गीत प्रेम, सौंदर्य और भावनाओं की गहराई को दर्शाता है। इसमें प्रिय व्यक्ति की तुलना सुंदर आकाश, तारों की चमक और स्वर्ग जैसी अनुभूति से की गई है। गीत में प्रेमी अपने साथी के प्रति गहरे स्नेह और आकर्षण को व्यक्त करता है–वह बताता है कि उसका प्रेम अथाह है, जिसे मापा या पूरी तरह समझा नहीं जा सकता। गीत में विरह (दूरी) की भावना भी झलकती है, जहां प्रिय दूर है, लेकिन सपनों और उम्मीदों में हमेशा साथ रहता है। प्रकृति के प्रतीकों–जैसे आकाश, सागर, फूल और रात–के माध्यम से प्रेम की सुंदरता और तड़प को बेहद काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी–781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट: www.janjanvichar.in ● कार्यकारी संपादक : सुभाष कुमार चौधरी ●संपादक : धनेश्वर चौधरी